॥ ओ३म् ॥

बरेली की आर्य विभूतियाँ


पं० बिहारी लाल शास्त्री




डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या

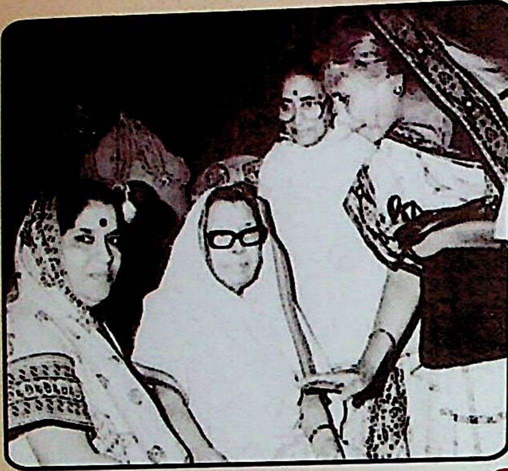



आचार्य विश्वश्रवाः व्यास

प्रकाशक
आर्य समाज बिहारीपुर
महर्षि दयानन्द चौक, बरेली

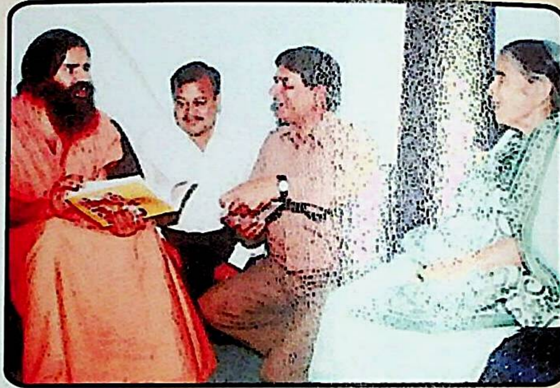

डॉ० संतोष कण्व

संस्मरण एवं स्मृतियाँ शेष





राष्ट्रीय कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा के साथ वेदभारती डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या विशिष्ट अवसर पर



योग मर्मज्ञ स्वामी रामदेव जी के साथ वेदों के विषय में गम्भीर चर्चा करती हुयीं वेदभारती डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या साथ में अमर उजाला के पत्रकार वृजेन्द्र निर्मल तथा पुस्तक के सम्पादक डॉ० श्वेतकेतु शर्मा। (बरेली योग शिविर के अवसर पर)





वेदभारती डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या द्वारा शतपथ ब्राह्मण का भाष्य करने पर समर्पणानन्द शोध संस्थान द्वारा विज्ञान भवन दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में वेदभारती डॉ० सावित्री जी के अभिनन्दन के अवसर पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (रामगोपाल शाल वाले) स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती एवं पूर्व प्रधानमंत्री मा० चन्द्रशेखर जी।



आर्यसमाज विहारीपुर में वार्षिकोत्सव के अवसर पर ब्रह्मचारी संतोष कण्व द्वारा सारगर्भित व्याख्यान देते हुये साथ में वेदाचार्या डॉ० सावित्री शर्मा

विजया आर्या



बरेली की आर्य विभूतियाँ

संरक्षक

डॉ0 वेद प्रकाश शर्मा
(प्रधान)

अखिलेश रायजादा
(मंत्री)

राजेन्द्र कुमार
(कोषाध्यक्ष)

कैलाश नरायण मेहरा
(संयोजक/पूर्व प्रधान)

सम्पादक

आचार्य (डॉ0) श्वेतकेतु शर्मा

प्रकाशक

आर्य समाज बिहारीपुर
महर्षि दयानन्द चौक, आर्य समाज गली
बरेली (उ0 प्र0) फोन : (0581) 2475657

प्रथम संस्करण : रविवार, 2 दिसम्बर 2007 सहयोग राशि : रू0 25.00

अवसर : वेदभारती स्मृति समारोह के अवसर पर प्रथम बार 1000 प्रतियाँ



।। ओ३म् ।।

आर्यसन्यासी

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

वेदभिक्षु

द्विवचसी

वेद ही सभी समस्याओं का हल है, वैदिक चिन्तन को आत्मसात करे बगैर समाज को सन्मार्ग प्राप्त नहीं हो सकता है। वेदों के चिन्तन को जन सामान्य में पहुँचाना आज की आवश्यकता है। इस कार्य को त्याग, तपस्या, ज्ञान व समर्पण के भावों से बरेली की चारों विभूतियों पं० बिहारी लाल शास्त्री, वेदभारती डॉ० सावित्री वेदाचार्या, आचार्य विश्वश्रवाः जी तथा कर्मठ आर्य युवक संतोष कण्व जी ने देश के जन मानस को जागृति प्रदान की थी।

आर्य समाज बिहारीपुर इन विभूतियों का जीवन दर्शन प्रकाशित करके समाज को समर्पित कर रहा है। यह कार्य अद्भुत एवं समाजोपयोगी है। उनके अनुकरणीय जीवन से समाज एवं राष्ट्र को प्रेरणा मिलेगी एवं उससे समाज का प्रत्येक वर्ग लाभान्वित होगा। यही मेरी शुभकामनायें हैं। "बरेली की आर्य विभूतियाँ" नामक पुस्तक को जन सामान्य तक पहुँचाया जाये। जिससे उनके श्रेष्ठ कार्यों एवं आदर्शों का अनुकरण समाज कर सके, यही उन आदर्शवान महापुरुषों को सच्चे श्रद्धासुमन होंगे।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

(स्वामी ब्रह्मानन्द वेदभिक्षु)

आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली



।। ओ३म् ।।

आर्यसन्यासी

महात्मा स्वामी गोपाल सरस्वती

द्विवचसी

वेदभारती डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी की पुण्य स्मृति पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा, बरेली द्वारा आयोजित वेदभारती स्मृति समारोह के अवसर पर आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली द्वारा प्रकाशित "बरेली की आर्य विभूतियाँ" नामक पुस्तक का जन-जन में प्रचार-प्रसार व अध्ययन के लिये प्रेरित किया जाये, ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं।

महापुरुषों के जीवन से स्वयं के सुधार की प्रेरणा मिलती है तथा समाज व राष्ट्र को एक नवीन उत्साह चेतना का प्रादुर्भाव होता है। बरेली की चारों विभूतियों ने वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार में अपूर्व योगदान दिया है। सर्वस्व समर्पित करके ऋषि दयानन्द के स्वप्न को साकार किया है। उनके जीवन का एक-एक पल हम सबकी प्रेरणा का स्रोत बने और हम उनके आदर्शों का अनुपालन करें, यही उन विभूतियों को वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती

(महात्मा गोपाल सरस्वती)

आर्य वानप्रस्थ आश्रम

नोएडा

A

॥ ओ३म् ॥

विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी वेदभारती (डॉ०) सावित्री देवी शर्मा, वेदाचार्या जी को सादर समर्पित

वेदभारतीं वंदे, सादरं वंदे

वेद ऋचाओं से सुशोभित,
देव भाषा को समर्पित।
विश्व कल्याण में समाहित
वेद भारतीं, वंदे, सादरं वंदे॥१॥

विश्व में गूंजता वेदोपदेश जिनका
जन जन में समाता सत्योपदेश जिनका
संस्कार संस्कृति में पिरोया जीवन जिसने
वेद भारतीं, सावित्रीं वंदे, सादरं वंदे॥२॥

निर्भीक स्वाभिमानी प्रकाण्ड वैदुष्य वाली
त्याग तपस्या सरलता दया से विभूषित
मनसः वाचा कमर्णः के जीवन वाली
वेदभारतीं, विदुषीं वंदे, सादरं वंदे॥३॥

श्रेष्ठतम कर्म ने बनाया जीवन महान
वेदोपदेश से करती थीं राष्ट्र निर्माण
मानव को मानवता का दे गई संदेश
वेद भारतीं, वेदाचार्यां वंदे, सादरं वंदे॥४॥

आत्मीय अनुराग ने बदला जीवन सबका
वेदवाणी ने बनाया संस्कारवान जीवन
रोम रोम में समा गई प्रेरणा जिनकी
वेद भारतीं, मातुं वंदे, सादरं वंदे॥५॥

अमर हो गई, वेद भारती भारती
सन्मार्ग दिखा गई, नारी संम्मान दिलागई
आदर्श बन गई, कण कण मे बस गई
वेद भारतीं, देवीं वंदे, सादरं वंदे॥६॥

समर्पण

डॉ० वेदप्रकाश शर्मा *प्रधान*	राजेन्द्र कुमार *कोषाध्यक्ष*	अखिलेश रायजादा *मंत्री*

आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली

कैलाश नारायण मेहरा *संयोजक*	हर्षवर्धन आर्य *प्रधान*	डॉ० श्वेतकेतु शर्मा *सम्पादक*

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, बरेली

एवं समस्त सदस्य आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली



।। ओ३म् ।।

वेदवेदांगों में पारंगत युग की प्रथम महिला वेद उपदेशिका एवं विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त महिला वेदाचार्या व विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी

वेदभारती डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या का

जीवन दर्शन

वेदाचार्या तु सावित्री धर्मशास्त्रे विचक्षणः,
शास्त्रार्थ करणे दक्षःभाषणे तु सरस्वती।

वेदमयी बदायूं जनपद के पटियाली सराय क्षेत्र में ब्रहमण परिवार के वैदिक दार्शनिक विद्वान पं० राम स्वरूप पाराशरी एवं माता सुशीला देवी जी के पवित्र संरक्षण में अपनी चार पुत्रियों एवं दो पुत्रों में चतुर्थ श्रेणी की संतान वेद भारती डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या थी। बाल्यावस्था से ही आपका ध्यान अध्ययन व अध्यापन में ही रहता था। पार्वती आर्य कन्या संस्कृत विद्यालय बदायूँ में प्रारम्भिक शिक्षा का शुभारम्भ हुआ। अध्ययन के अतरिक्त आपकी किसी भी कार्य में रूचि न थी। आपकी सखियां भी पठन-पाठन का ही चिन्तन करती थी। विद्याध्ययन की अत्यधिक रूचि होने के कारण यह अपने पिता की भी परम प्रिय थीं।

प्रथम कक्षा से ही अपने माता पिता की लाडली एवं गुरूओं के भी आकर्षण की केन्द्र रहीं। प्रथम कक्षा में प्रथम स्थान पाने पर पुरस्कार स्वरूप अपने पिता से आशीर्वाद प्राप्त किया, कि अच्छे संस्कारों से युक्त भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत संस्कृत भाषा के अध्ययन से वेद वेदांगों के ज्ञान को प्राप्त करो। उसी का फल था आज देश-विदेशों में वेद वेदांगों में पारंगत इस युग की विख्यात प्रथम महिला वेद उपदेशिका व विश्व की प्रथम स्थान प्राप्त महिला वेदाचार्या तथा विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी के रूप में उन्हें जाना जाता है। १५ अप्रैल १९३२ में जन्मी वेदाचार्या सावित्री शर्मा ने अपना शैक्षिक जीवन दार्शनिक पिता की प्रेरणा से संस्कृत भाषा से ही प्रारम्भ किया।

शैक्षिक जीवन :-

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से प्रथमाः, पूर्वमध्यमा, उत्तरमध्यमा कक्षा से अपनी शिक्षा प्रारम्भ की थी, यह वह समय था जब बालिकाओं या महिलाओं को न तो घर से निकाला जाता था और न ही स्कूलों में बालिकाओं को पढ़ने भेजा जाता था, महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से बालिकाओं के कुछ विद्यालय व गुरूकुल प्रारम्भ हुये थे, उनमें भी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण बराबर बालिकाओं को घर पर बैठा दिया जाता था, ऐसे समय में वेदाचार्या सावित्री ने हाईस्कूल

व इण्टरमीडिएट की परीक्षायें भी अंग्रेजी विषय को लेकर १६४७-४८ में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। इसी के साथ अपना गौरवान्वित शैक्षिक जीवन का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ-

१. बी०ए०- अग्रेजी, राजनीति शास्त्र के साथ आगरा विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी।
२. एम०ए० संस्कृत - आगरा विश्वविद्यालय प्रथम श्रेणी।
३. एम०ए० हिन्दी - आगरा विश्वविद्यालय प्रथम श्रेणी।
४. विशारद हिन्दी साहित्य - हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग। देश में प्रथम, प्रथम श्रेणी, स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
५. साहित्य रत्न - हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम श्रेणी।
६. शास्त्री (साहित्य - पुराणोतिहास) १६५० - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, प्रथम श्रेणी।
७. आचार्य - पुराणेतिहास - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, प्रथम श्रेणी।
८. आचार्य - संस्कृत साहित्य - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, प्रथम श्रेणी।
६. आचार्य - व्याकरण - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, प्रथम श्रेणी।
१०. आचार्य - वेदाचार्य - १६८० - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, प्रथम श्रेणी। विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त, महिला वेदाचार्या होने का गौरव प्राप्त, विश्वविद्यालय द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त।
११. पी-एच०डी० - विषय - शतपथ ब्राह्मण के प्रतीक विधान, १६८८ रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
१२. जूनियर संगीत डिप्लोमा - प्रयाग संगीत समिति प्रयाग, प्रथम श्रेणी।

प्रकाशित व अप्रकाशित रचनायें :-

आपने निम्न पुस्तकें लिखी हैं -

१. शतपथ ब्राह्मण के प्रतीक विधान-प्रकाशक - श्री धूडमल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, ब्यानिया पाडा हिन्डौन सिटी, राजस्थान
२. मोहन मंत्र-गीता का पद्यानुवाद - प्रकाशाधीन
३. काव्याञ्जलि-कविताओं का संग्रह-वेदभारती प्रकाशन, बरेली।
४. संस्कृत काव्याञ्जलि - संस्कृत कविताओं का संग्रह, वेदभारती प्रकाशन बरेली।
५. वेदाञ्जलि-चुने हुये वेदमंत्रों की व्याख्या - प्रकाशाधीन, हिन्डौन सिटी, राजस्थान

६. वेद व्याख्यान निबन्ध संग्रह – प्रकाशाधीन, हिन्डौन सिटी, राजस्थान
७. शतपथ ब्राह्मण भाष्य – समर्पण शोध संस्थान, दिल्ली द्वारा प्रकाशित
८. वीर हकीकत राय व अन्य महापुरूषों पर नाटक – अप्रकाशित
६. सावित्री सूक्ति सौन्दर्य – स्वरचित सूक्तियों का संग्रह – वेद भारती प्रकाशन बरेली।

प्रकाशन :-

आपके अनेक लेख, कवितायें, वेद व दर्शनों पर सारगर्भित लेख राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है –

आर्यमित्र, आर्यजगत, आर्य मर्यादा, आर्य संकल्प, सार्वदेशिक, भारतोदयाः, गाण्डीवम्, सर्पगन्धा, पारिजातम्, पवमान, परोपकारी, वेद पथ, वेदज्योति, वेद प्रदीप (नासिक), अर्न्तराष्ट्रीय वेदपीठ (शोध पत्रिका), अमर उजाला, बरेली, दैनिक जागरण, बरेली, आदि में प्रकाशित हो चुके हैं।

आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रसारण :-

आकाशवाणी रामपुर के संस्कृत कार्यक्रम का शुभारम्भ आपके करकमलों द्वारा किया गया था, आपके अनेकों संस्कृत काव्य आकाशवाणी रामपुर से प्रसारित हो चुके है, आकाशवाणी बरेली के प्रारम्भ होने के उपरान्त आपका साक्षात्कार तथा हिन्दी संस्कृत काव्य प्रसारित हो चुका है, दूरदर्शन बरेली से भी आपका साक्षात्कार व हिन्दी संस्कृत काव्य प्रसारित हुये थे।

विवाह :-

ग्राम दौली जिला बरेली के प्रसिद्ध ब्राह्मण परिवार में पं० बलदेव प्रसाद शर्मा के सुपुत्र डा० सुरेन्द्र शर्मा से विवाह सम्पन्न हुआ। डा० सुरेन्द्र शर्मा राजकीय सेवा में चिकित्सा अधिकारी के पद से अवकाश प्राप्त हुये थे तथा आयुर्वेद एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, जिन्होंने समाज व देश के लिये अपूर्व योगदान दिया था। जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग से ही वेदाचार्या डा० सावित्री शर्मा विश्व विख्यात महिला वेद विदुषी के रूप में प्रसिद्ध हुयीं। जिनका निधन २६ जून १६६७ में हुआ था।

अध्यापन कार्य :-

१. हेडमिस्ट्रेट – पार्वती आर्य कन्या संस्कृत विद्यालय में १६५१ से १६५३ तक, हेडमिस्ट्रेट के पद पर कार्य किया था।
२. प्रधानाचार्या पद – आर्य महिला विद्यापीठ मुसावर राजस्थान में १६५४ को प्रधानाचार्य के पद पर कार्य किया, परन्तु कुछ समय के अनन्तर त्यागपत्र दे दिया था।
३. संस्कृत प्रवक्ता – आर्य कन्या इन्टर कालेज मिर्जापुर उ० प्र० में संस्कृत प्रवक्ता के रूप में १६५५ से १६६५ तक कार्य किया।

४. प्रधानाचार्या – मिश्री लाल शाह आर्य कन्या उच्यत्तर माध्यमिक विद्यालय, छपरा, बिहार। सन् १९६६ से १०७२ तक कार्य किया।

५. कन्या गुरूकुल हाथरस में मुख्य अध्यापिका के पद पर कार्य किया।

६. लोक सेवा आयोग उ० प्र० ने शिक्षा विभाग में महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति की गई थी, परन्तु वेदों के प्रचार के द्वारा समाज सुधार की भावना ने एक वर्ष तक खाली रहे पद को स्वीकार नहीं किया।

७. कई महाविद्यालयों में संस्कृत प्रोफेसर पर नियुक्ति हुई परन्तु देश सेवा एवं वेदोपदेश से समाज सुधार की भावना ने उपरोक्त पद स्वीकार नहीं किया।

८. विद्यालय एवं सामाजिक व्यस्तता होने पर भी अपने निवास पर विभिन्न विषयों का अध्यापन निःशुल्क कराती थी, विद्या दान को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया।

सेवा काल की विशेषतायें :-

विद्यालय में जहां पर भी कार्य किया वहां की गलत परम्परा को दूर करने का प्रयास किया, अच्छे कार्यों के लिये सर्वदा तत्पर रहीं। चरित्रनिर्माण, संस्कृत, भारतीय संस्कृति, वैदिक शिक्षा को महत्व दिया, सामूहिक संस्कृत सम्भाषण, सामूहिक यज्ञ का शुभारम्भ किया, छात्राओं की वेशभूषा पर विशेष बल दिया, दुपट्टा तथा सूती कपड़े के वेश पहनने पर ही विद्यालय में प्रवेश की स्वीकृति प्रदान की तथा इसका कठोरता से पालन कराया। शिक्षिकाओं का वेश भी भारतीयता से ओत-प्रोत ही रखा एवं स्वयं भी भारतीय वेश-भूषा से ओत-प्रोंत, सिर से पल्ला, सीधे पल्ले की साड़ी का ही बड़े से बड़े मंचों पर भी उपदेश देते समय प्रयोग किया।

विद्यालयों में अनुशासन व शिक्षा पर विशेष ध्यान केन्द्रित रहा, प्रबंध समिति एवं अपनी कार्य शैली के बीच कभी विवाद नहीं हुआ और यदि कहीं पर अनिर्णायक स्थिति बनी तो विद्यालय के हित को ध्यान में रखकर ही कार्य किया तथा उस कार्य में सत्यता के पक्ष के लिये सर्वदा त्यागपत्र देने को तत्पर रहीं। अपना सेवाकार्य धन के लिये नहीं अपितु सेवा के लिये कार्य किया तथा वेतन को दक्षिणा के रूप में ही स्वीकार किया, अध्यक्ष व प्रबंधक स्वयं घर पर जाकर नम्रतापूर्वक दक्षिणा प्रदान करते थे। सत्यता के लिये सर्वदा दृढ़ रही, रीजनल इंस्पैक्टर के द्वारा अनुशासन एवं शैक्षिक व्यवस्था की अपूर्व प्रशंसा के उपरान्त यह कहने पर की आप धर्म का प्रचार अधिक करती है, इस पर वेदाचार्या सावित्री जी ने कहा कि जिस पद पर आप वैठी है, वहाँ क्या आप अधर्म का कार्य करती है और उन्हें प्रबंध समिति के समक्ष निर्भीकता से तीस मिनट धर्म शब्द की व्याख्या करके उपदेश प्रदान किया था। उस निर्भीकता का यह प्रभाव रहा कि ईसाई महिला रीजनल इंस्पैक्टर, बिहार ने उस विद्यालय की वार्षिक

ग्रान्ट दुगुनी कर दी तथा बिहार सरकार को प्रशंसा के रूप में विशेष पत्र भी लिखा था, आज भी छपरा के उस विद्यालय में उनका चित्र सम्मान पूर्वक लगा है तथा उनकी स्मृतियाँ व उनके कार्य सर्वदा स्मरण किये जाते हैं।

सेवा कार्यकाल में संस्कृत भाषा को विशेष महत्व दिया, संस्कृत आम जन की भाषा बने इसको विकसित करने के लिये विद्यालयों में एक बेला संस्कृत सम्भाषण के लिये निश्चित की गई थी अर्थात् एक निश्चित बेला में सभी छात्रायें शिक्षिकायें, कर्मचारी संस्कृत में ही सम्भाषण करते थे, पूरा विद्यालय उस समय संस्कृतमय वातावरण के रूप में ही दीखता था।

संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी भाषा के शिक्षण पर भी विशेष बल दिया, उनके विद्यालय में छात्रायें अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत व क्षेत्रीय भाषाओं को बोलने, लिखने व पढ़ने में पूर्ण समर्थ थी।

युग की प्रथम महिला वेद प्रचारिका :-

महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव के पश्चात् देश में स्त्रियों की शिक्षा व वेद पढ़ने का अधिकार प्राप्त हुआ, इससे पूर्व "स्त्री शूद्रो न दीयताम्" के वाक्य के आधार पर शिक्षा व वेद पढ़ने के अधिकार से स्त्रियों को वंचित रखा गया परन्तु ऋषि दयानन्द ने वेदों के आधार पर कहा कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहाँ नारियों का सम्मान होता है, शिक्षित होती है वह राष्ट्र, समाज व परिवार श्रेष्ठ व उन्नतिशील होता है। इसीलिये ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों की शिक्षा व वेद पढ़ने का अधिकार प्रदान किया। इसी के बाद देश में स्त्रियों की शिक्षा का प्रचलन तीव्रता से प्रारम्भ हुआ, स्त्रियों ने वेद पढ़ना प्रारम्भ किये। ऋषि दयानन्द के बाद स्त्रियों ने वेदों का अध्ययन अत्यन्त गम्भीरता से किया तथा विदुषी के रूप में उनको जाना जाता भी रहा परन्तु सार्वजनिक वेद प्रचार का साहस नहीं कर पायीं, इस युग में ऋषि दयानन्द के बाद महिलाओं में यह साहस कोई भी महिला नहीं कर पाई।

सर्वप्रथम वेदाचार्या डा० सावित्री जी ने २० वर्ष की अल्प आयु में १९५० ई० में अपने दार्शनिक पिता की प्रेरणा से वेद के प्रचार को प्रारम्भ किया और उसके बाद देश के कोने-कोने में कोई ऐसा स्थान न छोड़ा जहाँ वेदों के संदेश को जनता जनार्जन तक न पहुंचाया हो, आप ही की समकालीन पाणिनी कन्या महाविद्यालय की संस्थापिका आचार्या प्रज्ञा जी थी, जो आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिये महिला के रूप में आगे आयी थी, जिन्होंने स्त्री शिक्षा का महत्व पूर्ण कार्य किया था। वेदाचार्या सावित्री जी युग की प्रथम महिला वेद प्रचारिका के रूप प्रसिद्ध हुई। आपके बाद ही लाखों की संख्या में महिलाओं ने शिक्षा ग्रहण की थी, बालिकाओं के विद्यालय खोले गये, और आज हजारों की संख्या में महिलायें वेदों के अध्ययन व प्रचार में लगीं हैं।

विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त महिला वेदाचार्या :-

महर्षि दयानन्द जी के बाद महिलाओं को वेदों को पढ़ने का अधिकार मिल गया था परन्तु वेदों की परीक्षायें देने का अधिकार नहीं प्राप्त हुआ था अर्थात यदि महिलायें वेदाचार्या की परीक्षा देना चाहें तो उनके लिये अनेक व्यवधान लगाये जाते थे, यही स्थिति आचार्या सावित्री जी के साथ थी। सावित्री जी ने सर्व प्रथम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी में वेदाचार्या की परीक्षा देने के लिये आवेदन किया तो वेद विभाग के विभागाध्यक्ष महोदय ने अनेक आपत्तियाँ लगाकर आवेदन अस्वीकृत कर दिया था, परन्तु बाद में आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारी लाल शास्त्री जी, जो सावित्री जी के ताऊ जी थे, ने स्वयं विश्वविद्यालय जाकर अनेकों तर्क व प्रमाणों से उनकी आपत्तियों को खारिज कर दिया, अन्त में विश्वविद्यालय को सावित्री जी के लिये वेदाचार्या की परीक्षा में बैठने की अनुमति प्रदान करनी पढ़ी, और उन्होंने कठिन परिश्रम करके विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया, विश्वविद्यालय ने उन्हें इस उपलक्ष्य में स्वर्णपदक प्रदान करके सम्मानित भी किया था तथा विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त महिला वेदाचार्या के रूप में विख्यात हुई।

विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी :-

डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी को विश्व में चतुर्थ आर्य महिला विदुषी होने का गौरव प्राप्त हुआ है। आर्य समाज सिंगापुर ने विश्व स्तर पर एक सर्वेक्षण कराया और उस सर्वेक्षण में विश्व की १० आर्य महिला विदुषियों को निश्चित किया था तथा उन महिला विदुषियों का नाम एक विशाल शिलापट पर लिख कर आर्यसमाज सिंगापुर, लिंगन स्ट्रीट में लगा हुआ है, जिसमें डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी का नाम चतुर्थ स्थान पर लिखा है। विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी के रूप में गौरव प्राप्त हुआ है।

अनुशासन प्रिय :-

उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से लेकर परिवार, विद्यालय, समाज में अनुशासित होने का संदेश दिया। सर्व प्रथम अपने जीवन को पति की आज्ञा में अनुशासित किया अर्थात अपना प्रत्येक कार्य बिना पति की आज्ञा के नहीं किया, भारतीयता के परिवेश में अपने को ढालते हुये स्वयं को समाज व परिवार के प्रति अनुशासित रखा। आर्य समाज एवं देश के विभिन्न सामाजिक राजनैतिक व आध्यात्मिक कार्यक्रमों में पति की आज्ञा से जाना, पति के साथ या पुत्रों के साथ यात्रा करना तथा इन्हीं के साथ कार्यक्रमों में जाना उनका मुख्य नियम था, बच्चों को प्यार, बड़ों का सम्मान, स्वाभिमान व सदाचार की रक्षा का संकल्प जीवन भर रहा, जीवन के अन्तिम क्षण तक भारतीय वेश भूषा व संस्कारों में अपने को अनुशासित रखा।

स्वयं को अनुशासित रख कर ही अपने परिवार में छोटों पर पूर्ण अनुशासन विद्यमान रहा, आपके पुत्र, पुत्रवधुयें व पौत्र आपकी आज्ञा के बगैर एक कदम भी आगे नहीं चल सकते थे। आपने

सर्व प्रथम धर्म व सदाचार का उपदेश अपने परिवार को प्रतिक्षण प्रदान किया, धर्म व ज्ञान से परिपूर्ण रखा। जिन-जिन विद्यालयों में कार्य किया वहाँ की जीवन-शैली में अनुशासन व चरित्र को सर्वोपरि स्थान दिया। अधर्म का पालन करने वालों पर दण्ड का भी प्रयोग किया। अनुशासित व्यक्तियों को पुरस्कृत भी किया। अनेकों बार ऐसे अवसर आये कि अधर्मियों द्वारा विद्यालय को अनुशासनविहीन करने का प्रयास किया गया परन्तु अपनी तेजस्विता, स्वाभिमान, योग्यता तथा तीव्र क्रोधाग्नि से भस्मीभूत कर दिया, इसी कारण जिन संस्थाओं में कार्य किया वहाँ भी अनुशासित रहने का ही संदेश दिया।

सेवा भावना से ओतप्रोत :-

आपने अपने जीवन में सेवा को अत्यन्त महत्व दिया, सेवा परमों धर्माः को आदर्श अपना बनाया। सामाजिक, शैक्षिक व देश, राष्ट्र के लिये सर्वदा समर्पित रहीं, असहाय, असमर्थ की सहायता के लिये सर्वदा तत्पर रहीं, जिन शिक्षण संस्थाओं में कार्य किया, वहाँ वेतन के रूप में धन स्वीकार नहीं किया। जो कुछ भी धन ग्रहण किया वह बिना गिने केवल दक्षिणा के रूप में ही आग्रह पूर्वक ही स्वीकार किया था, आर्य समाज के या अन्य किसी भी कार्यक्रमों में जहां भी देश के कोने-कोने में निमंत्रित किया गया, वहां कहीं पर भी धन मांगा नहीं अपितु दक्षिणा के रूप में जो मिला उसे सहर्ष स्वीकार किया और यदि कहीं दक्षिणा नहीं मिली तो प्रसन्नतापूर्वक कार्यक्रम में सहभागिता पूर्ण कर ही सफलता प्रदान की। धन को समाज सेवा से सर्वदा दूर रखा, जहाँ कहीं भी धन का प्रलोभन दिया गया, उसे अस्वीकार कर दिया। यही कारण था कि उन्हें जीवन के अन्तिम क्षण तक मानसिक व शारीरिक शान्ति विद्यमान रहीं। सम्पूर्ण देश में अपार प्रतिष्ठा व सम्मान के साथ समाज की सेवा में तल्लीन रहीं।

असमर्थ व असहाय व्यक्तियों को सर्वदा वरद हस्त से दान दिया। अपनी दक्षिणा सम्बन्धित आय का सर्वदा दस प्रतिशत दान करती थी, इस हेतु दान खाता अलग रहता था। सेवा व दान को सर्वदा महत्व दिया।

स्वदेश, स्वराष्ट्र, स्वभाषा के सुधार की भावना :-

प्रारम्भ से ही आपके हृदय में यह प्रबल इच्छा रही कि स्वदेश,स्वराष्ट्र व स्वभाषा को एक सूत्र में पिरोया जाये अर्थात वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता, संस्कृत भाषा को समाज के समक्ष एवं समाज में एकरूपता का उदय हो। देश की विकृत भावना, अपनी प्राचीन परम्परा को विचलित न हो सके। देश के कोने-कोने पर विभिन्न स्थानों पर विशाल कार्यक्रमों में वैदिक संस्कृति व वैदिक राज धर्म का उपदेश दिया, राष्ट्र के कर्णधारों एवं राजनेताओं को अपने उपदेशकों एवं लेखनी से सर्वदा सम्बोधित करती रहीं, देश के हित में वोलने तथा सत्य स्पष्ट आलोचना करने में कभी भी घबराई नहीं, प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी द्वारा देश में आपात काल लगाने पर आपके ऊपर अनेक

प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये गये और गुप्तचर विभाग द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर आपके व्याख्यानों को टेप भी किया गया, पुलिस प्रशासन व सरकार द्वारा अनेकों प्रकार की चेतावनियाँ भी दी गयीं, कई स्थानों पर पुलिस प्रशासन उनको गिरफ्तार करने को भी आ गई थी परन्तु उनके प्रामाणिक विचारों के कारण उनको बन्दी बनाने का साहस नहीं हुआ। अपने सिद्वान्तों एवं विचारों की स्पष्टवादिता, सत्य व असत्य का विवेचन, सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ बोलना व लिखना, उनका नहीं रूका तथा वैदिक सिद्वान्तों व भारतीय संस्कृति के अनुरूप जो कहना था वह सर्वदा कहने में भयभीत नहीं हुयीं।

देश का सुधारवादी वैदिक संदेश लोक सभा में देने के लिये आपने १९८४ में बरेली १२ लोक सभा क्षेत्र से संसद सदस्या प्रत्याशी के रूप में चुनाव भी लड़ा था परन्तु धनाभाव व कलुषित राजनैतिक वातावरण के चलते पराजित अवश्य होना पडा, परन्तु समाज को भ्रष्ट राजनैतिक वातावरण के खिलाफ संदेश प्रदान किया। उनके विचारों में देश को स्वच्छ वैदिक कालीन राजनैतिक वातावरण की आवश्यकता है, जिससे समाज में जातिवाद रहित, कलुषित राजनीति से दूर, देश के विकास में समाज का प्रत्येक वर्ग राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहे। उन्होंने वैदिक राजनीतिक व्यवस्था के लिये संघर्ष किया तथा आर्य राष्ट्र को बनाने का सर्वदा स्वप्न देखा।

ऋषि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार :-

पारिवारिक पृष्ठभूमि से ही ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित रहीं, सत्यार्थ प्रकाश ने आपकी बुद्वि को परिपक्व किया। किसी भी कार्य को करने से पहले सत्य व असत्य का विवेचन करके ही अपने जीवन में अवतरित किया एवं समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया, देश भर में वैदिक सिद्वान्तों का प्रचार किया, गाँव-गाँव, नगर-नगर में लोगों को बौद्धिक दृष्टि से सतर्क रहने को कहा, अन्धविश्वास, कुरीतियों को दूर भगाने का संकल्प लिया, इस हेतु आम नागरिक को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का आवाह्न किया। वेद के मंत्रों को सरल व्याख्यानों के द्वारा समाज को समझाने का प्रयास किया, 'स्त्री शूद्रो न दीयताम्' का घोर विरोध किया तथा प्रत्येक स्त्री को वेद पढने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया, स्वयं भी वेदाचार्या बन के यह दिखा दिया कि स्त्रियाँ वेदों का अध्ययन करके समाज को उपदेश कर सकती हैं। नारी के महत्व को विशेष स्थान दिया, नारी शिक्षा के बिना परिवार का उत्थान असम्भव है, इन विचारों को जन जागृति अभियान से सामाजिक चेतना प्रदान की थी, वेद के प्रचार को महत्व दिया। स्वदेशवासियों से कहा कि वेद की ओर लौटो, उसके तत्व ज्ञान की सरल व्याख्या की, इसीलिये शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारी लाल शास्त्री जी ने वैदिक व्याख्यानों व सिद्वान्तों नें पारंगत डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी को वेदभारती की उपाधि से विभूषित किया था। सन् १९५० से २००५ तक ५५ वर्ष आर्य समाज तथा अन्य सामाजिक धार्मिक संगठनों में जहाँ

कहीं भी वेद प्रचार व उपदेश देने की आवश्यकता हुई, तो देश के कोने-कोने में अपने ज्ञान से लाभान्वित किया। वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार अत्यन्त तन्मयता से किये, देश के विभिन्न प्रान्त उ० प्र०, म० प्र०, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्कल, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, चन्डीगढ़, गुजरात तथा दक्षिण के कुछ प्रान्तों में जहां-जहां आर्य समाजें सक्रिय हैं, आदि स्थानों पर विशेष रूप से घनघोर प्रचार किया, इन सभी स्थानों पर आपकी अत्यन्त मान्यता तथा प्रभाव था। विशेष रूप से ऋषि दयानन्द व आर्य समाज के वैदिक सिद्धान्तों को सरल शब्दों में जनमानस तक पहुँचाना आपका उद्देश्य रहा, 'निष्कारणं ब्राह्मणें न शडह्गों वेदोऽध्येयोज्ञे य' इस मनु वाणी को सार्थक करने में कृत संकल्प रहीं।

शास्त्रार्थ में पारंगत :-

वैदिक सिद्धान्तों पर शास्त्रार्थ करने को सर्वदा तत्पर रहीं। वेद विरूद्ध एवं अन्धविश्वास को प्रश्रय देने वालों को सदा अपनी तार्किक बुद्धि से परास्त किया। निम्न स्थानों पर आपके द्वारा किया गया शास्त्रार्थ इतिहास बन गया -

१. आर्य समाज टांडा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर शास्त्रार्थ महारथी पं० राम दयालु शास्त्री के सानिध्य में मुस्लिम बन्धुओं से अनेक विषयों पर वैदिक प्रमाणों के साथ शास्त्रार्थ कर निरुत्तर किया, उनकी अनेक शंकाओं का शास्त्रीय समाधान भी किया, वहां के मुस्लिम समुदाय के लोग अत्यन्त प्रभावित हुये।

२. काशी शास्त्रार्थ शताब्दी - सन् १९६९ ई में आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आयोजित शास्त्रार्थ शताब्दी के अवसर पर मुख्य महिला विदुषी के रूप में स्थान प्राप्त हुआ था, इस अवसर पर आपने अनेक विषयों का धारा प्रवाह संस्कृत में ही बोल कर सप्रमाण उत्तर देकर निरुत्तर कर दिया था, बड़े-बड़े काशी के संस्कृत विद्वान नतमस्तक हो गये थे। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं संचालक प्रखर वक्ता एवं सांसद प्रकाशवीर शास्त्री थे, उन्होंने मुक्त कण्ठ से अपूर्व प्रशंसा की थी।

इसी अवसर पर पौराणिकों के सभा स्थल पर श्रोता के रूप में पहुँची तो वहां श्री जगतगुरू शंकराचार्य, स्वामी करपात्री जी, स्वामी माधवाचार्य, श्री प्रेमाचार्य जी की उपस्थिति में महर्षि दयानन्द की मिथ्या कटु एवं अभद्र आलोचना सुनकर अपार भीड़ में खड़े होकर धाराप्रभाव संस्कृत में उनकी आलोचना का उत्तर देना प्रारम्भ कर दिया और उन्हीं के मंच पर शास्त्रार्थ करने का निवेदन किया परन्तु उनके उत्तर से सभी निरुत्तर हो गये, और स्वामी करपात्री जी ने उसी समय मंच पर खड़े होकर, मंच से कहा कि विदुषी बेटी विद्योत्तमा हम अपने शब्दों को वापस लेते हैं, तथा आप जैसी आज की विद्योत्तमा महिला विदुषी का मंच पर स्वागत करते हैं। इसके बाद मंच पर वे गई उनका

स्वागत हुआ तथा आधुनिक विद्योत्तमा की उपाधि से विभूषित किया गया।

३. श्री स्व० पं० प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा समायोजित अनेकों विविध सम्मेंलनों में सत्यार्थ प्रकाश स्थापना शताब्दी व आर्य समाज स्थापना शताब्दी मेरठ, कानपुर, दिल्ली, अजमेर के अवसरों पर हुये शास्त्रार्थों में महिला विदुषी के रूप में तर्क पूर्ण वेदोक्त उत्तरों से निरुत्तर किया था। आपकी प्रकाण्ड विद्वता से विरोधी नतमस्तक थे।

४. आर्य समाज विधान सरणी कलकत्ता के वार्षिकोत्सव में आयोजित शास्त्रार्थ कार्यक्रम में ईसाई, मुसलमान व पौराणिकों के उत्तरों का सतर्क व सप्रमाण उत्तर प्रस्तुत किया, इस अवसर पर अनेक विद्वानों ने आपको सम्मानित भी किया।

५. पं० बिहारी लाल शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी ने आर्य समाज बिहारीपुर एवं अन्य देश की आर्य समाजों में आपकी विद्वत्ता, तार्किक बुद्धि एवं वेद शास्त्रों के गहन अध्ययन से प्रभावित होकर आपको वेद भारती उपाधि से सम्मानित किया था।

६. देश की अनेकों आर्य समाजों एवं सामाजिक कार्यक्रमों में वेद, दर्शन, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ एवं विचारणीय विषयों पर शास्त्रार्थ भी किये तथा लोंगों के प्रश्नों के उत्तर सप्रमाण भी दिये। जीवन के अन्तिम क्षण तक शास्त्रार्थ के लिये तत्पर रहीं, मृत्यु के २७ घण्टे पूर्व दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला के वरिष्ठ पत्रकारों को अनेकों प्रश्नों के उत्तर सप्रमाण दिये थे, जो अमर उजाला ने बड़े सम्मान पूर्वक प्रकाशित किया था।

पारिवारिक दायित्व व पति सेवा में सर्वदा तत्पर :–

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के अनुसार आप सर्वदा पति की सेवा में तत्पर रहीं एवं परिवार के दायित्व को माता व पत्नी के रूप में निर्वाह किया। पति राजकीय सेवा में थे, तो आपने सर्वदा पारिवारिक सुख शान्ति को एक सूत्र में बाँधने के लिये पति का स्थानान्तरण होने पर तुरन्त त्यागपत्र दे देती थी। अपने सेवा पद की कभी भी चिन्ता नहीं की थी। अपने बच्चों को एवं परिवार को संस्कार, संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत किया। बाल्यावस्था से ही संस्कृत सम्भाषण को महत्व दिया, हिन्दी या अंग्रेजी को परिवार में मातृभाषा के रूप स्थान नहीं दिया, संस्कृत को ही परिवार की मातृभाषा बनाई अर्थात परिवार में सभी लोग आपस में संस्कृत में ही वार्तालाप करते थे तथा आज भी करते है, संस्कृत के साथ हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में भी प्रवीणता प्राप्त की थी तथा परिवार में भी इस परम्परा को सुरक्षित रखा।

प्रत्येक पारिवारिक परिस्थिति को आपने सर्वदा सरलता से हल किया। धनाभाव होने पर भी आपने धनाभाव का अनुभव परिवार को नहीं होने दिया, पति की एक निश्चित आय में आर्थिक पारिवारिक दायित्व का निर्वहन किया। एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में माता एवं पत्नी के स्वरूप

को प्रतिष्ठित रखा। अपने परिवार में वेदोक्त सनातन यज्ञ उपासना को महत्व दिया जो आज भी उसी प्रकार परिवार में विद्यमान है। जब से आप इस परिवार में आयीं तब से अभी तक दैनिक यज्ञ की परम्परा उसी प्रकार चल रही है, जैसा उनका निर्देश था। आप कहीं पर भी बाहर जाती थीं तो आपके सामान के साथ यज्ञ कुण्ड व यज्ञ का सामान साथ में रहता था और यज्ञ के समय जहां कहीं भी स्थान हुआ, चाहें स्टेशन या ट्रेन का डिब्बा क्यों न हो दैनिक यज्ञ समय पर अवश्य होता था।

इस प्रकार आपने परिवार में विशिष्टता के साथ पूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वाह किया।

नारी सुधार में महत्वपूर्ण योगदान :-

आपने अपने जीवन में नारी सुधार पर विशेष बल दिया, स्त्रियों को शिक्षा के माध्यम से सुधारा, आपने प्रारम्भ से ही समाज में ऐसी पथ भ्रष्ट महिलायें जो अशिक्षित, असहाय, असमर्थ व धन के लोभ में अश्लील तथा समाज के द्वारा अवांछनीय कार्य में लिप्त थीं उनको उस वातावरण से निकाल कर अपने विद्यालय में शिक्षित करने के लिये प्रवेश कराया, ऐसी अनेक महिलायें शिक्षिकायें एवं अनेक उच्च्व पदों पर कार्य कर रहीं है।

आपका यह कार्य अल्प अवस्था में जब आप पार्वती आर्य कन्या कालेज में प्रधानाचार्या के पद पर आसीन थीं, उस समय जहां नारियों को समाज भोग विलास का मात्र साधन मानता था, उस सामाजिक दुर्दशा से दुखित होकर उन महिलाओं को उन दुष्कृत्यों से दूर करके सभ्य समाज में रहने योग्य उनके जीवन को श्रेष्ठ शिक्षित बनाया, जिन्होंने बाद में सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित की थी।

आपने संस्कृत अध्ययन को युवावस्था तक ही सीमित नहीं रख अपितु वृद्धावस्था में संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा प्रदान की थी, आपने बरेली की ही महिलायें श्रीमती लीलावती व श्रीमती रामकीर्ति देवी जी को ६० वर्ष की अवस्था के बाद प्रारम्भिक संस्कृत ज्ञान कराकर शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करायी थीं, उनका कहना था कि संस्कृत प्रत्येक आयु में पढ़ी जा सकती है और संस्कृति पढ़ने वाला व्यक्ति यशस्वी व दीर्घ आयु तथा परिपक्व बुद्धि वाला होता है।

आपने शिक्षा, वेशभूषा, आचरण, अनुशासन एवं कर्तव्यनिष्ठा से बालिकाओं, स्त्रिओं, महिलाओं के सुधार के लिये विद्यालयों, प्रवचनों, उपदेशों तथा साहित्य लेखन द्वारा अनेकों सुधारात्मक कार्य किये। आपके जीवन में वेदों का पठन-पाठन, वेदोपदेश तथा वेदों के पढ़ने की प्रेरणा देना तथा सरल भाषा में वेदों के तत्व ज्ञान से ओतप्रोत करना रहा। आप ही महर्षि दयानन्द के बाद महिलाओं में प्रथम ऐसी विदुषी महिला थी, जिन्होंने सर्वप्रथम इस युग में वेदों का अध्ययन किया, वेदों पर प्रवचन व उपदेश दिये, वेदों के चिन्तन को लेखन के माध्यम से समाज को नवीन ज्योति प्रदान की थी, इसलिये आप युग की प्रथम महिला वेद प्रचारिका के रूप में प्रसिद्ध हुयीं। आप ही के बाद देश में महिलाओं द्वारा वेद के पठन-पाठन व शिक्षा का दौर प्रारम्भ हुआ और आज देश

में हजारों की संख्या में बालिकाओं के विद्यालय, गुरूकुल चल रहें है। आप की इस परंपरा के उपरान्त ही अनेक विदुषी महिलाओं ने वेदों का अध्ययन करके वेदोपदेश व प्रचार प्रारम्भ किया। आप समाज को भारतीयता के परिवेश में ढालने का प्रयास कर रहीं है।

संस्कृत गोष्ठियों का आयोजन :-

आपने संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये सर्वप्रथम स्वयं बाल्यावस्था से संस्कृत का सम्भाषण प्रारम्भ किया, पुनः अपने परिवार में प्रारम्भ से ही बच्चों के बीच संस्कृत का सम्भाषण किया, जिस कारण से परिवार की मातृ भाषा संस्कृत बनायी अर्थात परिवार के सभी बाल वृन्द, युवक, वृद्ध तथा सेवक आदि में भी आम बोल-चाल की भाषा संस्कृत ही थी और आज भी आपके परिवार में उस परम्परा का निर्वाह हो रहा हैं।

इसके बांद समाज में संस्कृत को प्रतिष्ठित रखने के लिये तथा प्रचार-प्रसार के लिये, संस्कृत को जन भाषा बनाने के उद्‌देश्य से विद्यालयों में, आर्यसमाजों में, सांस्कृतिक संस्थाओं में संस्कृत गोष्ठियों का आयोजन प्रारम्भ कर वर्षों चलाया। जिन गोष्ठियों में संस्कृत में संचालन, संस्कृत सम्भाषण, संस्कृत काव्य पाठ, संस्कृत निबन्ध, संस्कृत हास्य व्यंग, संस्कृत गद्य काव्य का ही वातावरण होता था। बरेली में आपने संस्कृत विद्वानों के सहयोग से शारदीया संस्कृत गोष्ठी का प्रारम्भ किया, जो आज भी चल रही है।

धारा प्रवाह संस्कृत सम्भाषण की योग्यता :-

आपने अपने जीवन में भाषा के रूप में संस्कृत भाषा को सर्वाधिक महत्व दिया, आप में यह क्षमता थी कि बड़े-बड़े मंचों से कई घण्टे धारा प्रवाह संस्कृत में व्याख्यान दे सकती थीं। आपने देश के कोने-कोने में विभिन्न मंचों से चाहें वह आर्यसमाज का हो या विश्व हिन्दू परिषद् या आर्य समाज द्वारा सम्पन्न हुयी शताव्दी समारोहों में अनेकों बार अनेकों मंचों से आपने धारा प्रवाह संस्कृत में व्याख्यान दिये थे। राष्ट्रीय अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलनों में अनेकों स्थानों पर आपके व्याख्यान संस्कृत भाषा में ही हुये हैं। पद्‌म विभूषित आचार्य कपिल देव द्विवेदी, पं० प्रकाश वीर शास्त्री, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी आनन्द स्वामी जी, स्वामी आनन्द बोध जी, स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश आदि अनेकानेक विद्वानों ने अनेकों मंचों से आपके संस्कृत व्याख्यानों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

अध्यात्म में रूचि एवं मान्यतायें :-

आपने वेद शास्त्रों का गम्भीरता से अध्ययन किया, उन ग्रन्थों का सर्वदा विरोध किया जिससे अन्धविश्वास को बढ़ावा मिलता है। ईश्वर-जीव-प्रकृति के त्रैतवाद सिद्धान्त को वेद के आधार पर मान्यता प्रदान की थी। एकेश्वरवाद को माना, अष्टांग योग को महत्व दिया, मानवतावाद का वेद के आधार पर समर्थन किया। राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति, संस्कारों को विशेष महत्व प्रदान किया।

तुलसी कृत रामचरितमानस व महाभारत को ऐतिहासिक काव्यात्मक ग्रन्थों के रूप में ही मान्यता प्रदान की थीं, इसके कुछ अंश जो वेद विरूद्ध थे, उन अंशों को लेखक की काल्पनिक कृति ही माना, महर्षि वाल्मीकि रामायण सत्य ऐतिहासिक ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया, श्रीमद्‌ भगवत गीता को संदेशात्मक, उपदेशात्मक ग्रन्थ के रूप में अध्ययन करने की प्रेरणा दी थी। पुराणों व भागवत को काल्पनिक ग्रन्थों की संज्ञा प्रदान की थी। दर्शन को जीवन का अंग माना।

वेदों को पूर्णप्रामाणिक ईश्वरकृत जीवनोपयोगी अत्यावश्यक पठनीय, अनुकरणीय सार्वभौमिक ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया अन्य सभी ग्रन्थों को मनुष्य कृत स्वान्तः सुखाय माना। समाज में व्याप्त अन्धविश्वास की घोर आलोचना की, नारी अनुशासन पर विशेष बल दिया। आपकी मान्यता थी कि जिस परिवार में स्त्रियों का सम्मान व अनुशासन होता है वह परिवार श्रेष्ठ व उन्नति के शिखर पर अग्रसर होते है तथा सुख व शान्ति रहती है, स्त्रियों को प्रत्येक क्षेत्र में आगे आना चाहिये परन्तु अपनी शालीनता, नम्रता तथा पारिवारिक दायित्व निर्वहन के बाद। आपने जन्म से मृत्यु तक के १६ संस्कारों को महत्व दिया। समाज का आवाह्न किया कि गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार तक के संस्कारों को प्रत्येक परिवार में कराने चाहिये। आपकी यह मान्यता थी कि यदि बाल्यावस्था से वैदिक संस्कारों को महत्व दिया जाये तो वह परिवार श्रेष्ठ व संस्कारवान बनेगा।

आपने जीवन भर गौरक्षा का समर्थन, अन्याय पूर्ण आरक्षण का विरोध, दूषित वर्तमान चुनाव प्रणाली का विरोध, स्वराष्ट्र, स्वभाषा-स्वदेशी चिकित्सा आयुर्वेद का समर्थन, स्वदेशी परिधान पर विशेष बल दिया।

गुण-कर्म-स्वभाव की सामाजिक व्यवस्था का समर्थन किया, इसी व्यवस्था से समाज में एकरूपता, आत्मीयता, अपनत्व व राष्ट्रीयता का विकास हो सकता है। उन्होंने कहा कि धर्म निरपेक्षता अर्थ हीन है, धर्म सापेक्ष राज्य की स्थापना पर बल दिया, धर्मनिरपेक्षता के कारण सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त है, आज की व्यवस्था में सब कार्य प्रजा के हित के लिये नहीं अपितु सत्ता की सुरक्षा के लिये हो रहे हैं। कश्मीर में आर्य राष्ट्र की परिकल्पना से ही समस्या का समाधान सम्भव है। आपकी मान्यता थी यदि देश में आर्य राष्ट्र की स्थापना हो जाये एवं ऋषि दयानन्द के विचारों को साकार रूप दिया जाये तो देश की सभी समस्याओं का समाधान आसानी से हो सकता है।

साहित्यिक अभिरूचि :-

बाल्यावस्था से ही आपकी लेखन में विशेष रूचि थी, आपने संस्कृत साहित्य में लेख, कवितायें अत्यधिक मात्रा में लिखी है, पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु में ही कवितायें लिखना प्रारम्भ कर दी थी। संस्कृत एवं हिन्दी में सामाजिक परिस्थितियों, देश भक्ति, दर्शन, वेद, प्रकृति भक्ति रस, श्रृंगार रस में संस्कृत कवितायें लिखी हैं, जो संस्कृत काव्यांजलि एवं काव्यांजलि नामक ग्रन्थ में संकलित है।

— —

इसी प्रकार आपने हिन्दी में विभिन्न विषयों पर २५०-३०० के लगभग लेख एवं शोध लेख लिखे हैं जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं जो काव्यालोक तथा दार्शनिक निबन्ध निचय नामक ग्रन्थों में संकलित हैं।

आपने गीता का पद्यानुवाद किया है जो गीता पद्यानुवाद या मोहन मंत्र नामक पुस्तक में संकलित है।

आपने वीर हकीकत राय एवं अन्य महापुरूषों पर नाटक भी लिखे हैं।

आपने ऋग्वेद के कुछ मंत्रों की सारगर्भित व्याख्यान रूप में व्याख्या लिखी है, जो वेद व्याख्यान नामक ग्रन्थ में संकलित है।

शतपथ ब्राह्मण नामक ग्रन्थ का आपने भाष्य भी किया है जो समर्पणानन्द शोध संस्थान दिल्ली ने प्रकाशित किया है। इस भाष्य पर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी एवं मा० प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर जी ने ११०००/- रू० से विज्ञान भवन दिल्ली में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया था।

शतपथ ब्राह्मण के प्रतीक एक विवेचनात्मक अध्ययन नामक विशिष्ट विशाल ग्रन्थ की आपने रचना की है, जो श्री धूड़मल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, हिन्डोन सिटी द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस विशाल ग्रन्थ पर आर्य समाज हिन्डोन सिटी, राजस्थान ने रू० १५०००/- अभिनन्दन पत्र, दुशाला एवं ट्राफी से आर्य साहित्य पुरस्कार के रूप में सम्मानित किया गया।

आपके कुछ काव्य की विशेषतायें :-

निम्न संस्कृत काव्यान्जलि में प्रकाशित हैं -

१. संस्कृत भाषा के अध्ययन की प्रेरणा देते हुये आपने लिखा -

पिवन्तु संस्कृतम् जनः लिखन्तु संस्कृतम् जनः
पिवन्तु मानवाः सदा स्वसंस्कृतामृतम् मुदा............
(आकाशवाणी रामपुर से २५-२-१९९२ को प्रसारित)

३. महर्षि दयानन्द के जीवन पर लिखा संस्कृत काव्य-

टडंकारेति सदा समृद्विबहुले मोर्वीप्रदेशस्थिते
ग्रामे शास्त्रपुराणपाठकुशलैः सुब्राह्मणेः सेविते
श्री कृश्णाख्य द्विजगृहं स्वजनुशा यो वै समालोकयत
मनाहार्य मनस्वि मुनि दयानन्दाय तस्मै नमः.....................

४. आपने संस्कृत में ईश्वर भक्ति गीत लिखा जो अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ और आकाशवाणी रामपुर से प्रसारित भी हुआ था-

करूणावरूणालय पालयनो परिताप हताप निशम् दीनबन्धो !
ग्रस्ताःक्लेश कुलैःविपुलै संत्रस्तास्त्रिविधै स्तापै......................

५. संस्कृत का श्रुति संदेश गीत जो आकाशवाणी रामपुर से १६-०१-१९९१ में प्रसारित किया गया -

श्रुति संदेश मधुमय रागम्, भवभीतिहर विममलं सुखदम्
श्रृण्वन्तु समेदुप्यमृत पुत्राः, प्ररूशार्थचतुश्टय फलवरदम्.......

६. देश के धर्मनिरपेक्ष राज्य पर कटाक्ष करते हुये आपने लिखा-

किं धर्म विहीनं प्रशासनं प्रोच्यते धर्मनिरपेक्षमिदम्
अथवा कथनीयमिदं सत्यं शासनं धर्मसापेक्षमिदम्.......

७. मा० मुलायम सिंह मंत्रित्वकाल में रामजन्मभूमि पर हजारों हिन्दुओं के ऊपर गोलियाँ चलाने पर दुखित होकर लिखा संस्कृत काव्य -

मा मुलायम् प्रतिष्ठाम् त्वमगमः शाश्वती समाः
यतेदान शस्त्रहीनान वै हतवान क्रूर मानसा ....

८. मधुमास पर लिखा प्राकृतिक सौन्दर्य काव्य-

कूजन्ति पंन्चमें स्वरे कोकिलाः समागतो रचितो मधुमासः
अनन्दयति मनांसि सर्वेषाम् वासन्ती सुशमाया हासः.............

९. भारतीय संस्कृति पर लिखे संस्कृत गीत -

भारते भारतीया शुभा संस्कृति यज्ञिया पावनी लोकहित कारणी
दृश्यते यत्र ज्योतिर्मयी साधना श्रूयते वेद सन्देश सद्भावना.............

१०. प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुये आपने संस्कृत गीत -

कथं इव नीरज सैन्दर्यम्
सौरभं वितरति सामोदं
कस्य मनोरंजयसि जलज त्वम्
सुरभित तनुरेकम्..................

हिन्दी में अनेकों रचनायें लिखी है जिसके कुछ अंश निम्न है -

१. दार्शनिकता को प्रकृति से मिला कर निम्न पंक्तियाँ -

जलज तुम सुन्दर हो किस लिये
तुम्हारा सौरभ किसके लिये
भ्रमर शायद होगा भटका करता है,
तप्त हुआ सा दिशि दिशि में..................

२. भारतीय नारी पर लिखे कुछ अंश -

भारत की संस्कृति नष्ट हुई, अवशेष कहानी हो रही,
नारीगण जाग उठो अब, क्यों आलस में जीवन खो रहीं.....

३. बसन्त के मनोहारी दृश्य व प्रकृति के दार्शनिक तत्व का विवेचन निम्न कविताओं में -

आया बसन्त प्रिय पिक बोली
निशदिन मनस ताप में धुल धुल
गाय नित वह विरह गान
दुःख में पीडा में खोया निज..............

४. भारत प्रहरी नामक गीत में देश भक्ति की अनुपम छाप निम्न कविताओं में -

भारत के जागृत प्रहरी को रे दानव तूने क्यों छेड़ा,
तनिक न सोचा अपने हित में सजा कंटकों का बेड़ा
हल्दी घाटी जगा रही है सोये वीर जवानों को,
राजस्थानी माँ पुकारती अपने शेर सपूतों को
देख पंचनद भेज रहा है अगणित गुरू गोविन्दों को
पाती भेज बुलाया वंदा वैरागी दीवानों को।..................

५. इसी प्रकार इस देश की वीरता व देश भक्ति का गुणगान करती है निम्न पंक्तियाँ -

भूखे शेरों से रिपुदल पर चढ़े वीर करने संहार
भारत कितने पानी में है जान गया सारा संसार
समझ रहा था विश्व देश यह गांधी और बुद्ध का है
पंचशील का गायक कभी न गाता गान युद्ध का है
दया मूर्ति है सरल हृदय यह भाव न कभी रोष का है
क्षमा दान देता है सबको उर अगाध सागर सा है................

६. देश की दुर्दशा को देख कर ऋषि दयानन्द का स्वप्न साकार हो इसी भाव में -

ऋषिवर हो आज कहाँ भारती पुकारे
खोकर निज विभव हीन, दीन दुखित शक्तिक्षीण
सूखे हे आर्य विटप म्लान हुये हैं मलिन............

७. भारतीय संस्कृति को नष्ट होते देख कर भाव विभोर होकर लिखी पंक्तियाँ -

वे स्पप्न कहां जिनमें देखूं, वैदिक संस्कृति का पुण्य रूप
वह ज्योति कहां जिनमें खोजूं सच्ची संस्कृति का सत्य स्वरूप.....

८. प्रेम के भाव को प्रकृति के सामन्जस्य से कविता में भाव प्रकट करती -

अरे प्रेम की निष्ठा ऐसी कौन इसे समझाये
प्रेमी कभी न थकता जग में पिय चाहें थक जाये
रजनी में पिय इन्दु देख कर, चित चकोर आनन्द विभोर
चांद जिधर ही बडे उधर ही, उसने करी नयन की कोर..........

६. इस ईश्वर का विराट स्वरूप का वर्णन करते हुये आपने लिखा

आंखे नहीं ठहरती, हे विराट तुम पर
तुम हो अनादि अनुपम हे चिर अनंन्त सहचर
कुछ हो चली है सध्या, छायी गगन में लाली
रवि जा रहे थे अपने, घर छोड़ आज पानी..................

इस प्रकार आपने ३०० कवितायें विभिन्न विषयों पर लिखी हैं।

इसके अतिरिक्त आपने अंग्रेजी भाषा में भी कुछ कवितायें लिखी हैं, जिसमें अंग्रेजी का लोरी गीत काफी लोकप्रिय हुआ -

Oh lavely lavely my chield
I Come to you my dear chield
Why are you weeping in this way
Your uncle has come song and play
Look dear vasu there are toys
They have brought for you these toys
Oh lavely lavely my chield....................

आप के द्वारा लिखे कुछ लेख जिन्होंनें देश में चर्चा का विषय पैदा किया था, उनके कुछ शीर्षक - आपने विभिन्न विषयों पर लगभग २५०-३०० लेख लिखे है, जो देश के कोने-कोने में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित हो चुकें है - कुछ लेख के शीर्षक प्रस्तुत है -

१. वर्तमान चुनाव प्रणाली, २. अल्प संख्यक या हरिजन-लोकतंन्त्र, ३. धर्मनिरपेक्ष-समाजवाद, ४. आत्मानुशासन, ५. प्रजातन्त्र व धर्मतन्त्र, ६. संविधान, ७. वोट की राजनीति, ८. आन्दोलन, ६. बेरोजगारी, १०. तसलीमानसरीन, ११. त्रिभाषा सूत्र व संस्कृत, १२. वेद व पुराण, १३. बाल मनोविज्ञान व प्रशिक्षण, १४. ओंकार चिन्तन, १५. ओंकार उपासना, १६. भूर्भुवः स्वः, १७. भारतीय स्वतंत्रता व नारी जागरण, १८. जन संख्या और आहार, १६. विद्वान क्यों उदासीन हो रहे हैं, २०. जन्मदर व मृत्युदर, २१. परिवार नियोजन बनाम सन्तति निरोध, २२. वर्तमान विधि, २३.

राम राज्यम्, २४. वर्तमान विधि के मुख्य दोष, २५. शिक्षक स्वतंत्र हो, २६. आधुनिक परीक्षा प्रणाली, २७. कक्षा प्रणाली, २८. वर्तमान निर्वाचन प्रणाली, २६. वैदिक राज्य व्यवस्था, ३०. सा विद्या या विमुक्तये, ३१. मानो ही महताम् धनम्, ३२. वेद और निरूक्त, ३३. वेद प्रतिपादित राज धर्म, ३४. स्वाधीनता विजय भारती, ३५. कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, ३६. द्वारं किमेकं नरकस्य नारी, ३७. अहं भूमिमददामार्याय, ३८. श्री वैशिष्ट्यम्, ३६. दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः, ४०. प्राचीन भारतवर्षे गुरू शिष्य परम्परा (आकाशवाणी रामपुर से ०५-०१-८४ को प्रसारित); ४१. वाल्मीकि रामायण का कश्चित सर्ग, ४२. प्रियदर्शिनी देवी इन्द्रा, ४३. श्रावणी पर्व, ४४. भारत में गृह युद्ध व हिंसा, ४५. भारत में हिन्दुओं सावधान, ४६. ईश्वरी वाणी वेद, ४८. याज्ञिक प्रक्रिया में विनियोग।

पुरस्कार एवं अभिनन्दन :-

आपको देश के कोने-कोने में विशिष्ट पुरस्कारों एवं अभिनन्दनों से सम्मानित किया गया- कुछ पुरस्कारों एवं अभिनन्दनों का विवरण निम्न है -

१. आर्य जगत का सर्वोच्य आर्य विदुषी महिला अभिनन्दन एवं पुरस्कार (आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई द्वारा)
२. स्वामी धर्मानन्द पुरस्कार एवं सम्मान (आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर)
३. स्वामी समर्पणा नन्द अभिनन्दन एवं पुरस्कार (मा० पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्र शेखर जी द्वारा प्रदत्त, विज्ञान भवन, दिल्ली में)
४. विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त महिला वेदाचार्या होने का पुरस्कार (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा)
५. आर्य समाज स्थापना शताव्दी समारोह वाराणसी में विदुषी महिला का सम्मान उपराष्ट्रपति महामहिम श्री वी० डी० जत्ती जी के कर कमलों द्वारा।
६. आर्य जगत का सर्वोच्च श्री धूडमल प्रहलाद कुमार आर्य साहित्य सम्मान, आर्य समाज हिन्डौन सिटी द्वारा।
७. आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली द्वारा विशिष्ट सम्मान से सम्मानित।
८. उडीसा राज्य के कटक में वेद मंदिर का उद्घाटन एवं अभिनन्दन।
१०. श्री टीवरी नाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय, बरेली में प्रकाण्ड विदुषी महिला के रूप मे नागरिक अभिनन्दन।
११. आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली द्वारा वेदाचार्या परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर अभिनन्दन।
१२. आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली द्वारा आर्य महिला विदुषी का नागरिक अभिनन्दन।

१३. सनातन धर्म सभा, बरेली द्वारा विदुषी महिला अभिनन्दन।
१४. महर्षि अगस्त मुनि सभा, बरेली द्वारा नागरिक अभिनन्दन।
१५. गायत्री परिवार बरेली द्वारा नागरिक अभिनन्दन।
१६. अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा, बरेली द्वारा नागरिक अभिनन्दन।
१७. आनन्द आश्रम बरेली में गुरू गंगेश्वरानन्द आश्रम, नासिक द्वारा चारो वेदों को स्थापित करने के अवसर पर उद्घाटन किया तथा इसी अवसर पर अभिनन्दन भी किया गया।
१८. आर्य समाज बिहारीपुर द्वारा पुनः१९९८ में आर्य महिला सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।
१९. आर्य स्त्रीसमाज बिहारीपुर बरेली द्वारा अभिनन्दित।

इसके अतिरिक्त आपके देशभर में विभिन्न संस्थाओं द्वारा ४१ अभिनन्दन हुये हैं।

पारिवारिक विशेषतायें :-

१. परिवार में सामुहिक संस्कृत सम्भाषण, मातृभाषा संस्कृत
२. परिवार में दैनिक सामूहिक वैदिक यज्ञ
३. वैदिक ग्रन्थों का पठन-पाठन
४. भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत संस्कारवान परिवार
५. आर्य संस्कृति के उपयुक्त वेशभूषा
६. जीवन के १६ संस्कारों की परिवार में वैदिकता के आधार पर स्थापना।
७. अन्धविश्वास कुरीतियों को दूर कर वैदिक संस्कृति की स्थापना।

पारिवारिक परिचय :-

१. पति का नाम - डा०सुरेन्द्र शर्मा, अवकाश प्राप्त चिकित्साधिकारी, राजकीय सेवा में सेवारत, निधन - २९ जून १९९७।
२. ज्येष्ठ पुत्र - श्री कविक्रतु शर्मा, प्रबन्धक, श्री सीमेन्ट लि० व्यावर, राजस्थान। दो पुत्र १. विभावसु २. विश्वावसु, पत्नी - श्रीमती कमलेश शर्मा।
३. मध्यम पुत्र - डा० श्वेतकेतु शर्मा, चिकित्सक, नीम की चढ़ाई, बड़ा बाजार, बरेली। दो पुत्र - १. ज्योर्तिवसु शर्मा २. वेदवसु शर्मा, पत्नी - श्रीमती उषा शर्मा।
४. कनिष्ठ पुत्र - श्री शतक्रतु शर्मा, सेवारत वन विभाग, वसु ग्राफिक्स, बरेली। दो पुत्र - १. विद्यावसु २. प्रभावसु शर्मा, पत्नी - श्रीमती रश्मि शर्मा

जीवन का अन्तिम चरण :-

आपने अपने जीवन के अन्तिम चरण तक अध्ययन, अध्यापन, वेदोपदेश एवं सद्विचार सदा प्रत्येक को प्रदान करती रहीं, देश के विभिन्न स्थानों से निमंत्रण आने पर उत्साह से जाने को व्याकुल रहती

थी, शारिरिक दुर्बलता होने पर भी वेदोपदेश के लिये स्वीकृति प्रदान करने को तत्पर रहती थी।

आपके पूज्य पति डा० सुरेन्द्र शर्मा जी के निधन के उपरान्त मनोभावों में एकाकी सा प्रतीत होने लगा था, क्योंकि देशाटन व बर्हिगमन पति की सहभागिता एवं आदेशानुसार ही होता था, इस कारण उनका अभाव अन्तिम क्षणों तक प्रतीत होता रहा, और इसी कारण बरेली के कार्यक्रमों के अतिरिक्त देश के अन्य स्थानों पर मन होते हुये भी जाने का उत्साह न हुआ। फिर भी अस्वाभाविक सरल भावों ने आर्य समाज हिन्डौन सिटी के अत्यन्त आग्रह पर पुत्र व पुत्रवधु के साथ अपने विशाल ग्रन्थ शतपथ के प्रतीक के विमोचन के अवसर पर गई थी, वहां पर जब उनसे यह कहा गया कि यहां पर आपको आर्य साहित्य पुरस्कार से अभिनन्दित किया जायेगा, तब उन्होंने अत्यन्त सरलता से कहा कि अभिनन्दन तो अनेकों हो चुके हैं, इसकी आवश्यकता नहीं है, अपितु ग्रन्थ का प्रकाशन हो तथा उसका लाभ समाज को मिले, यह कार्य मेरे सफल अभिनन्दन के तुल्य है।

शारीरिक दुर्बलता से कभी भी विचलित नहीं हुई, शरीर में चिकित्सकों द्वारा सभी परीक्षण के उपरान्त निरोग काया होने पर सदा समय पर उठना, यज्ञ उपासना आदि समय पर करना, दैनिक स्वाध्याय तथा अपनी प्रिय शिष्याओं को संस्कृत एवं वेदों का अध्ययन कराना ही उनका दैनिक स्वभाव रहा।

दुर्बल होते हुये भी पराधीनता स्वीकार नहीं की थी, परिवार में पुत्र व पुत्रवधुओं की अपार सेवा से पूर्ण सन्तुष्ट थी, धन, सम्पत्ति व भौतिकता के संसाधनों में कभी भी आसक्त नहीं हुई और पति के निधन के उपरान्त तो सभी पारिवारिक दायित्व पुत्रों व पुत्रवधुओं को सौंप दिये थे। प्रतिक्षण यही इच्छा रहती थी कि आय का दस प्रतिशत दान होता रहे, इसलिये वे समय-समय पर दान करती रहती थी।

आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में उनका निरन्तर जाना तथा वहां वेदोपदेश करना अन्तिम क्षणों तक बना रहा, मृत्यु के दो वर्ष पूर्व आर्य समाज बिहारीपुर के साप्ताहिक सत्संग में वेदोपदेश करने के उपरान्त लौटते समय रिक्शे की असावधानी के कारण अस्थि भंग होने पर भी अपार कष्ट को सरलता से अनुभव किया तथा आपरेशन के उपरान्त स्वस्थ होकर घर आने पर उनके कनिष्ठ पुत्र ने उनसे पूछा कि आपने अपने जीवन में सर्वदा सत्योपदेश, वेदोपदेश, सत्याचरण एवं श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति के अनुरूप सात्विक आहार के द्वारा जीवन को व्यतीत किया है, तब स्वस्थ रहते हुये, आपको यह कष्ट क्यों हुआ ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुये उन्होंने अत्यन्त सरलता से कहा कि कष्ट का आना पूर्वजन्म का कोई दोष हो सकता है, परन्तु इस जन्म में मेरे द्वारा किये गये सत्याचरण का सुफल यह है कि अस्थि भंग के उपरान्त ही चिकित्सकों का निरीक्षण रहा, चिकित्सकों द्वारा शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिला

तथा १५ दिन में कष्टानुभव न होते हुये पैरों से चलना प्रारम्भ हो गया तथा साथ में तुम्हारे द्वारा चिकित्सक डॉ० आर० जी० शर्मा को समुचित धन देने पर भी उन्होंने उसे सहर्ष अस्वीकार कर दिया, जिससे आर्थिक भार न तो तुम पर पड़ा और न ही मुझे अनुभव हुआ और इन १५ दिनों में चिकित्सालय में रहने के दौरान न जाने कितने आप्त पुरूषों एवं महिलाओं से धर्मचर्चा व वेदचर्चा निरंतर होती रही तथा हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ० आर० जी० शर्मा ने अत्यन्त आत्मीयता से निःस्वार्थ भाव से सेवा की थी, यही मेरे जीवन के सत्याचरण, शुभाचरण, दैनिक यज्ञ उपासना, वेदोपदेश एवं समाज को आर्योचित संदेश देने का सुफल था। जो उस अस्थि भंग कष्ट से कहीं अधिक सुखद था, इसलिये उस कष्ट का अनुभव न हुआ और न ही जीवन में कभी हो सकता है। इसलिये जीवन को सफल, सुखद बनाने के लिये सत्याचरणों में पिरोना चाहिये। यही श्रेष्ठ संस्कार जन्म-जन्मान्तरों तक सुफलता प्रदान करते हैं।

जीवन के अन्तिम आयाम के २७ घण्टे पूर्व अमर उजाला बरेली के संम्पादक डा० वीरेन्द्र डंगवाल जी के निर्देश पर वरिष्ठ पत्रकार श्री अजीत बिसारिया ने फोन पर साक्षात्कार करने के लिये निवेदन किया तब उन्होने कहा कि अब तो अन्तिम साक्षात्कार का अनुभव हो रहा है, फिर साक्षात्कार की क्या आवश्यकता है, फिर भी सम्पादक महोदय का आग्रह है तब अवश्य आयें।

वरिष्ठ पत्रकार विसारिया जी घर पर अपनी टीम के साथ आयें और उन्होने जीवन के अनेकों प्रश्नों का गम्भीरता से उत्तर प्राप्त किया, उन्हें स्वतः यह अनुभव नहीं हो पा रहा था कि २७ घंटे बाद यह आत्मा इस शरीर को छोड़ देगी, उन्होंने उस अन्तिम क्षणों में अध्यात्म से लेकर वैदिक सार्वभौमिक चिन्तन के सामाजिक परिवेश की विस्तार से चर्चा की थी, उनके चेहरे का स्वरूप आनन्द व ज्ञान से परिपूर्ण था, प्रत्येक प्रश्नों का उत्तर कम शव्दों में प्रतीकात्मक शैली में प्रदान किया था, अमर उजाला की टीम ने इस साक्षात्कार को अनुपम एवं श्रेयस्कर बताया, किसे पता था कि उनके द्वारा दिये गये अनमोल वाक्यों को वे स्वयं प्रकाशित होता नहीं देख पायेंगीं, क्योंकि उन्होंने पहले ही कह दिया था कि अन्तिम साक्षात्कार तो मेरा चल रहा है - बस फिर क्या २७ नवम्वर २००५ को ब्रह्ममुहूर्त में कुछ अस्वस्थता प्रतीत हुई, बरेली के वरिष्ठ चिकित्सक डा० ओ० पी० अग्रवाल जी एवं डा० डी० पी शर्मा जी एवं कई आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ० डी० के० द्विवेदी ने चिकित्सकीय परामर्श दिया और कुछ औषधियों द्वारा लाभ होने का आश्वासन दिया, अपरान्ह ३ बजे तक स्वास्थ्य काफी कुछ ठीक रहा, इस बीच लोगों का आना-जाना व देखने का तांतां शुरू हो गया, इस बीच अनेक विषयों पर उनसे प्रतीकात्मक भाषा में आने-जाने वाले लोगों से चर्चायें भी हुयीं।

ईश्वर का विधान व स्वयं ईश्वर से साक्षात्कार की लालसा ने शाम ५ बजे अचेतन अवस्था में पहुँचा दिया, चिकित्सकों के बीच धीरे-धीरे आश्चर्यचकित प्राणों का वर्हिगमन प्रारम्भ होने लगा,

चिकित्सकों ने एम्बुलेन्स बुलायी और स्ट्रेचर भी समीप आ गया, चिकित्सालय में ले जाने की तैयारी भी शुरू हो गई, इसी समय उनके दोनों पैर चेतना रहित हो गये, पुनः शरीर का आधा हिस्सा चेतना शून्य हो गया, अन्त में शाम ६ बजे गर्दन तक निश्चेतन शरीर से युक्त होकर ओ३म् की तीव्र ध्वनि को बाहर फेंकते हुये परमपिता परमेश्वर की व्यवस्था में सदा के लिये लीन हो गई।

वेद वेदांगों की प्रकाण्ड विदुषी, विश्व की प्रथम स्थान प्राप्त महिला वेदाचार्या, विश्व की चतुर्थ आर्यमहिला विदुषी तथा युग की प्रथम महिला आर्य उपदेशिका ने संसार को आत्मसात करके, श्रेष्ठ वैदिक ज्ञान में पिरोकर, विश्व को जन कल्याण का उपदेश देकर अस्ताचल की ओर चल पड़ी। दैनिक जागरण ने प्रकाशित किया "देव भाषा का ध्रुव तारा अस्त" तथा अमर उजाला ने लिखा "प्रेमी कभी न थकता जग में, प्रिय चाहें थक जाये" के साथ राष्ट्र कल्याण के भावों को रोम-रोम में बसा गई, युगों तक उनकी स्मृतियाँ नवीन चेतना प्रदान करती रहेगी।

किसी कवि ने आपके विषय में सत्य ही लिखा है -

१-

शुचि सहज साधुता की प्रतीक
अति सरल वेष उन्नत विचार।
सन्तोष-रोष, सित असित भानु।
निर्दोष निरन्तर निर्विकार

२-

शासन में स्वमेव वृष्ण
अरू पोषण में तरू कल्प-कल्प।
शिव-रूद्र युग्म, रत-विरत शुद्ध
प्रिय सुख दुख के युग कष्ट तरू

३-

रसनाग्र नर्तति सततेव वाणी,
यस्या मृदुः मधु निष्पन्दिनी च
गुरूणां गुरूः या परमेष्टि साध्वी,
विदुषी वरा श्रेष्ठ ऋतम्भरा च

४-

सौभाग्य-शीला सुतरां सुशीला,
शान्ति-स्वरूपा, भुवि कीर्तनीया
गुणोन्नता वाक् सुवि भूशिता च,
नारीशु-रत्नाऽतिकुशला च पण्डिता

(लेखक : डॉ० श्वेतकेतु शर्मा)

"वेद सर्व सत्य विद्याओं की पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

— महर्षि दयानन्द

।। ओ३म् ।।



भारतीय संस्कृति के गौरव आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारी लाल शास्त्री

यत संकल्पसंसति प्रवितता लीला-विलासस्थली,
यस्योन्मेष-बशादियं विलसिता सूर्यादिलोक-प्रभा।
यन्माधुर्यमुपासितुं स्मुदयते रवे वैद्यवीयं सुधा,
ध्यात्वा तद्धि बिहारीलाल-चरितं प्रस्तौमि दैव्या गिरा।।
चारू चरितामृतम्।।

संसार का प्रत्येक कण जब आहत होता है, तो अपनी गरिमामयसत्व की परिभाषा को दोहराता है। उस भारतीय संस्कृति की परिभाषा को गौरवान्वित करने वाले, संकल्प मात्रा से आर्य संस्कृति का दीप दीप्यमान करने वाले, लीलाविलास की पवित्र वसुन्धरा में वैदिक ज्योति को फैलाने वाले, जिसके मधुर मधु का पान पीते ही सारा वातावरण दिव्य प्रत्फुल्लित हो जाता था। ऐसे उस ब्रह्मज्ञान की महिमा वाले मूर्धन्य विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारी लाल शास्त्री का यशोगान उसी प्रकार विश्व में विद्यमान है जैसा कि "अरविन्द घोष" ने कहा था कि - "जिस प्रकार विश्व की चोटियों में सर्वोच्च चोटी हिमालय है उसी प्रकार महर्षि दयानन्द एवं उनके अनुयायी सर्वोच्च चोटी हिमालय के समान महान भारत के प्रणेता व दिव्य ज्योति के संदेशवाहक हैं।" -

पागवड़ा इति ग्रामो मुरादाबाद मण्डले,
तीर्थ स्थानन्तु छीपीना विरायः साधुसंङ्गते।
जन्मभूमिरियं पुण्या बिहारी लाल शास्त्रिणः,
पौष कृष्णस्य सप्तम्यां बिहायास्यान् दिवङ्गतः।।
चारू चरितामृतम्।।

वेद-वेदाङ्ग संस्कृत साहित्य तथा अरबी-फारसी के मूर्धन्य विद्वान, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त विद्ववेण्य आचार्य पं० बिहारी लाल शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी मुरादाबाद जिले के पागवड़ा नामक ग्राम में सन् १८६० (फागुन शुक्ला तृतीया सं० १६४७ वि०) में आपके शुभावतरण से यह भारतभूमि में माता लीलावती से वीर प्रसविनी हुई थी। आयु समृद्धशाली, सम्पन्न माता-पिता की एक मात्र सन्तान

थे। पौराणिक परम्परा में सर्वप्रथम शिव पूजन की परम्परा का ही निर्वहन किया। प्रारम्भ में अपने पारिवारिक व्यवसाय के अनुसार मुड़िया लिखना तथा मुनीम का हिसाब भी सीखा था। किन्तु बाद में सर्वप्रथम अपनी पूज्य माता जी की प्रेरणा से प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू, फारसी के माध्यम से प्रारम्भ की थी। उसी के परिणाम स्वरूप आप उर्दू-फारसी, अरबी के विशेष विद्वान बने। कुरान-बाइबिल का आद्योपान्त गम्भीर अध्ययन कर वैदिक सिद्धान्तों पर आजीवन प्रभावोत्पादक शास्त्रार्थ करते रहे। मुसलमान-ईसाई आदि सब ही आपकी तार्किक भाषा पारिवारिक स्नेहमय सद्भाव का आदर करते थे। वस्तुतः पण्डित जी "वसुधैव कुटुम्बकम् यत्र तवत्येकनीडम्" जैसे सार्वभौमिक कल्याणकारी मानवतावादी सूत्रों को व्यावहारिक जीवन का आदर्श मानते रहे यहीं उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा का वास्तविक रहस्य था।

एक दिन सौभाग्य से उनके परिवार में आये हुये संस्कृत विद्वान पं० छेदा लाल जी ने शास्त्री जी के पितामह श्री बुद्धसेन तथा पिता श्री अयोध्या प्रसाद जी से पंडित जी को संस्कृत भाषा के अध्ययन की प्रेरणा दी थी। उन्हीं के परामर्श से उन्होंने संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ किया। पं० छेदालाल ने पंडित जी को लघु कौमिदी अमर कोष आदि का गहन अध्ययन कराया था। इसके उपरान्त पं० वैद्यनाथ शास्त्री के अथक सहयोग से जवाहर संस्कृत पाठशाला मुरादाबाद में पढ़कर प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इसके उपरान्त सम्भल संस्कृत पाठशाला, इस्लामियाँ स्कूल मुरादाबाद, रतनपुर की जैन पाठशाला तथा बरेली की सरस्वती विद्यालय में आपने अध्यापन कार्य प्रारम्भ करके साथ में काव्यतीर्थ, शास्त्री आदि परीक्षायें भी उत्तीर्ण कर ली थीं। आचार्य परीक्षा भी करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया और उझानी के म्युनिस्पिल इण्टर कॉलेज में संस्कृत प्रवक्ता के रूप में कार्य करते हुये १६५६ में अवकाश ग्रहण किया। और बरेली को ही वैदिक धर्म के प्रचार का केन्द्र बनाया पण्डित जी ने अध्यापन के साथ-साथ समस्त वैदिक वाङ्मय का आद्योपान्त स्वाध्याय किया। इसी अनवरत शैक्षिक तपश्चर्या के परिणामस्वरूप भारत के विद्वानों में मूर्धन्य स्थान प्राप्त किया। वक्तव्य कला के धनी शास्त्रार्थ महारथी ने न जाने कितनी बार मनोरन्जक भाषा में ही विरोधियों को सैद्धान्तिक विषयों पर शास्त्रार्थ करते हुए परास्त किया। उनके सौजन्य एवं हार्दिक स्नेह के कारण विरोधी भी उन्हें अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखते थे। उनके रोचक व्याख्यानों में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी समान रूप से उपस्थित रहते थे और उनके अकाट्य तर्कों से प्रभावित होकर उनके भक्त बन जाते थे।

शेर-ए-मन्तिक पादरी ज्वाला सिंह से चाँदपुर में पण्डित जी का मुबाहसा हुआ जिसमें पादरी पूर्ण रूप से परास्त हुये। उपस्थित मुसलमान मौलवियों ने पण्डित जी की तार्किक शक्ति विद्वत्ता देख पादरी को पराजय की घोषणा की थी। बिजनौर में पादरी रोनाल्ड पानसन की शंका समाधान में पण्डित जी के वैदिक तर्कों के सामने नत-मस्तक हो गया।

एक बार लखनऊ में पण्डित जी ने अनेकों सनातनी पण्डित शास्त्रार्थ में पराजित होने के

उपरान्त श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्रार्थ करने को उत्साहित हुये। माधवाचार्य कुछ ही समय में पण्डित जी से पराजित हो गये। पराजित होकर माधवाचार्य ने उस शास्त्रार्थ का अनर्गल भाषा में प्रकाशित किया जिस पर पण्डित जी ने उस पुस्तक के प्रकाशक व माधवाचार्य पर अदालत में उन पर मुकदमा चलाया। अदालत के समक्ष माधवाचार्य को पश्चाताप कर क्षमा याचना करनी पड़ी तब वे बच सके। पण्डित जी ने अपनी "दम्म दमन" पुस्तक लिखकर माधवाचार्य के छल-कपट पूर्ण तत्कालीन लेखों का खण्डन किया है।

पण्डित जी कभी भी लोभ प्रलोभन से नहीं झुके वे सिद्धान्तवादी, निर्भीक व साहसी आर्य सेवक थे। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार निडर होकर निर्भीकता से किया। सन् १९१४ में पण्डित जी मुसलमानों से शास्त्रार्थ में सफल होकर आर्य समाज में एकान्त विश्राम कर रहे थे। उसी समय कुछ दुर्दान्त मदान्ध यवन जन शस्त्रों के साथ आकर पण्डित जी को भयभीत कर अपनी सैद्धान्तिक वार्ता से विमुख होने को कहा, तो पण्डित जी ने कहा कि यह ऋषि दयानन्द का चेला है वैदिक ओ३म् की पताका का संदेशवाहक है। अपनी बात से कभी भी विमुख नहीं होता है। यह सुनकर उन यवनों ने प्राणघातक हमला किया जिससे शास्त्री जी मरणासन्न अवस्था के रूप में रक्त-रंजित हो गये थे। वे यमन "अल्लाह हो अकबर" का नारा लगाते मरणासन्न समझ कर चले गये। परन्तु जब लोगों ने प्रातःकाल पण्डित जी को देखा तो वे ओ३म् का जाप कर रहे अर्धविक्षिप्त अवस्था में पड़े थे। उनकी समुचित चिकित्सा हुई और पुनः वेद पताका लेकर तीव्र ध्वनि में शास्त्रार्थ को ललकारा।

पण्डित जी सुयोग्य लेखक के रूप में आर्य प्रतिभावान होने से अनेक दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक शिक्षाप्रद ३४ पुस्तकों का प्रणयन कर प्रकाशित किया। जिससे अध्ययन से न जाने कितने मनुष्यों की आन्तरिक ज्योति प्रकाशित हुई। विविध प्रश्नों का समाधान भी मिला। आध्यात्मिक शंकायें भी समाहित हुई। उनकी लिखी "वेद व पशुबलि", "वैदिक पताका", "दृष्टान्त सागर", दम्म दमन, ऋग्वेद का रहस्य, अथर्ववेद का रहस्य, वेदवाणि, चोटी और लंगोटी, सुमन संग्रह, वेद प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश का आलोचन, साकार निराकार निर्णय, योगिराज श्री कृष्ण, इस्लाम का स्वरूप, चुने हुये फूल, धर्म तुला, चार शास्त्रार्थ, अंगदचरण, मूर्तिपूजा पर प्रामाणिक शास्त्रार्थ, क्या मूर्तिपूजा वेदोक्त हैं। शिव का यथार्थ स्वरूप तथा गोस्वामी तुलसीदास एवं उपरोक्त मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त पण्डित जी ने स्वामी दर्शनानन्द कृत वेदान्त दर्शन के उर्दू भाषा का हिन्दी अनुवाद भी किया था तथा चाणक्य नीति का भाषानुवाद भी आपने किया था। पूज्य पण्डित जी अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। पण्डित जी ने व्याकरण का अध्ययन पं० भवानी दत्त जोशी व पं० श्री कान्त झा से पढ़ा था। दर्शनों का गहन अध्ययन महन्त श्री कृष्णानन्द तथा जैन व बौद्ध दर्शन पं० ईश्वर चन्द्र जैन से पढ़ा था। इस प्रकार पण्डित जी ने विभिन्न मतावलम्बियों के ग्रन्थों का अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्म नेत्रों से किया था।

पण्डित जी ने अपने तीन वर्ष का कार्यकाल आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा में मुख्य अध्यापक

के रूप में भी व्यतीत किया था। यह विद्यालय उपदेशकों के निर्माण के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध रहा है। इस विद्यालय में दार्शनिक विद्वान राहुल सांस्कृत्यायन, आर्य जगत के रत्न अमर स्वामी जी, मौलाना महेश प्रसाद, पं० राम चन्द्र आर्य मुसाफिर आदि मूर्धन्य विद्वान इस विद्यालय के विद्यार्थी रहे थे।

पण्डित जी मुस्लिम, ईसाई, जैन तथा अन्यान्य मजहबों के सिद्धान्तों के मर्मज्ञ होने के साथ-साथ हिन्दी संस्कृत, व्याकरण पर भी पूर्ण अधिकार था, निगमागम के उद्भव व्याख्याता वेद मर्मज्ञ पण्डित जी दयालु स्वभाव के व्यक्ति थे। प्रतिभाशाली व्यक्तियों को सदा आगे बढ़ाने में उनका सहयोग रहता था। उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचारार्थ कभी भी धन स्वीकार नहीं किया अपितु यदि कहीं से दक्षिणा के रूप में "पत्र पुष्पं फलं तोयं" जो कुछ भी दिया गया उसको सहर्ष स्वीकार कर पुस्तक आदि प्रकाशन या विद्यार्थियों के पठन-पाठन में ही सर्वदा व्यय किया।

वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिये वे सदा तैयार रहते थे। मार्ग व्यय आदि की कभी भी चिन्ता किये बिना ग्रामीण अञ्चल से लेकर भव्य स्थानों पर भी समयानुसार कष्ट उठाकर भी जाने का प्रयत्न करते थे। मैं स्वयं अनेक बार उनके साथ विभिन्न कार्यक्रमों में रहा हूँ उनकी त्याग तपस्या, भाषण शैली, तार्किक शैली को बड़ी निकटता से देखा था। उनके सामने किसी सम्प्रदाय का कोई भी विद्वान बड़ी सरलता से उनकी वाकपटुता से नत-मस्तक हो जाता था। हास्य व्यंग्य के धनी पण्डित जी में यह विशेष गुण था कि रोते हुये व्यक्ति को दृष्टिमात्र से व्यंगात्मक शैली के चुटकुलों से अपने उद्देश्य को प्रमाणित करते हुये हास्यमय वातावरण कर देते थे। उनका क्रोध भी सरलता-आत्मीयता से भरा हुआ होता था। नियमित दिनचर्या के पालन में वस्तुतः वे अत्यधिक कष्ट सहिष्णु, तपो धनी एवं कठोर साधक सिद्ध हुये थे। ऐसे ही महामानवों के विषय में किसी कवि ने सार्थक सूक्तिवचन कहे हैं।

वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणा ! चेतांसि कोऽहि विज्ञातुर्मरति।।

सर्वथा राग द्वेष, ईर्ष्या विहीनः पर प्रशंसक व्यक्तित्व वाले पण्डित जी अपने पराये का भाव त्याग कर सब ही स्वजनों की प्रशंसा द्वारा उसका उत्साहवर्धन किया करते थे। उन्होंने शरणागत किसी भी व्यक्ति को निराश नहीं किया। निष्काम कर्मयोगी के समान यथाशक्ति सबकी सहायता करते थे। उनका श्रेष्ठ चरित्र "नभूतों न भविष्यति" का उत्कृष्ट उदाहरण है। उनके जीवन में निर्भीकता, स्पष्टवादिता जैसे गुण सदैव पारस्परिक व्यवहार में प्रकट होते थे।

पण्डित जी आर्य जगत के उन उत्कृष्ट विद्वानों में थे जिनके गुणगान की आज भी प्रतिष्ठा सर्वत्र होती है। आर्य सभा बरेली ने उन्हें "व्याख्यान वाचस्पति" की उपाधि से सम्मानित कर चाँदी का मैडिल उनके सम्मान में दिया था। आर्य कुमार सभा और आर्य समाज बदायूँ ने उन्हें सोने का मैडिल प्रदान कर वाणी भूषण की उपाधि प्रदान की थी। आर्य विद्या सभा महाविद्यालय ज्वालापुर

में उनको "सिद्धान्त वाचस्पति" की उपाधि से विभूषित किया था। आर्य जगत में ही नहीं अपितु पौराणिक जगत में भी उनके हजारों की संख्या में अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया था तथा १९७३ में जगदीश विद्यार्थी के सम्पादक में पं० बिहारी लाल शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित हुआ है।

पण्डित जी का सम्पूर्ण ९६ वर्षीय जीवन पूर्ण सफल स्वस्थ रहा, वे अन्तिम समय के कुछ दिन पूर्व तक अपने सब कार्य ऐसे करते थे, जैसे कोई बच्चा अपने कार्य सरलता से कर लेता है। अन्तिम समय में अस्थिभंग के कष्ट में भी निरन्तर भगवत भजन में तन्मय रहे। आँखें खोलने पर समाचार पत्रों में भोजन के लिये उत्तम लेख लिखवाते रहे। मिलने को आये अपने स्वजनों को अपनी जीवन कालीन शिक्षाप्रद शास्त्रार्थ चचायें सुनाकर ज्ञान-वर्धन करते रहे। अन्तिम क्षण तक उनकी लोक हितकारिणी कर्म तन्मयता बनी रही। कभी किसी व्यक्ति से अपनी अपार वेदना व्यक्त नहीं की उनके जीवन के पवित्र आदर्श थे –

वदनं प्रसाद सदनं, सदयं, हृदयं सुधामयों वाचः।

क्षणभंगुर इस शरीर को ३ जनवरी १९८६ को त्याग तपस्या-ज्ञान के मूर्धन्य विद्वान ने अत्यन्त सरलता से जीवन को त्याग दिया।

बरेली नगरी धन्य है जिसको ऐसे महापुरुष का सानिध्य, आत्मीय प्रेम, स्नेह अपनत्व प्राप्त हुआ। बरेली का गौरवमयी इतिहास प्रतिक्षण उनकी स्मृतियाँ आज भी संजोये हुये हैं। उनके पुत्र स्व० श्री अरविन्द लाल ने सदाचार मय पवित्र संस्कारवान जीवन को व्यतीत करते हुये अपने पिता के यश को गौरवान्वित किया, आज पण्डित जी के पौत्र भी राजीव शर्मा में भी उनके पाण्डित्य के अवशेष दिख पाते हैं।

पण्डित जी ने अपने ज्ञान को वितरित करते हुये अनेकों आर्य जगत के दीप्यमान विद्वानों। विदुषियों को वरद हस्त प्रदान किया। उन्हीं का स्नेह अपनत्व आशीष प्राप्त कर बदायूँ के आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र, वेद पण्डिता वेदभारती डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या, आचार्य रामप्रसाद उपाध्याय फरीदपुर, डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री मनमोहन तिवारी, पं० शिव कुमार शास्त्री, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्रीमती आचार्या निर्मला मिश्रा, डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ० संतोष कण्व, महान पण्डित आचार्य रमेश चन्द्र शास्त्री आदि ने उनके यश का गुणगान कर वैदिक पताका को कण-कण में प्रकाशित करने का कार्य किया।

सत्य ही कहा है :-

भव्या भारतभूमिराशु भुवि मे धान्यादि-सम्पन्नताम्,
यायात्, आर्त्तजनो न कश्चिदखिले भूमण्डले दृश्यताम्।
सर्वे वैदिक-धर्म-मर्म-सुविदो भूयासुगढया द्विजाः,
नित्यं-याजन धूम्रराशिभिरलं नीलं नभो राजताम्।।

– डॉ० (आचार्य) श्वेतकेतु शर्मा
लेखक एवं सम्पादक

।। ओ३म् ।।



मूर्धन्य आर्य विद्वान, महा महोपदेशक आचार्य विश्वश्रवाः वेदानुसन्धान कर्ता

समाज सुधारक युगपुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के बरेली पदार्पण के उपरान्त नगर का यह सौभाग्य रहा कि यहाँ से जन्मे प्रकाण्ड विद्वानों ने देश-विदेश में वैदिक ध्वजा को वैदिक वाङ्मय से आच्छादित किया। युग की इस श्रृंखला में मूर्धन्य आर्य विद्वान, महामहोपदेशक, वेदानुसन्धानकर्ता आचार्य विश्वश्रवाः व्यास जी का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है। आचार्य जी के विषय में निम्न श्लोकों में उनके माता-पिता का वर्णन प्राप्त मिलता है -

तोता राम सुधी सुतो धनवती गर्भाश्च जातो बुधः,
शास्त्रज्ञः शिवदत्त दामाधिमथतो आचार्य विश्वश्रवाः,
साङ्गों पाङ्गं श्रुतौ चयः कृतमतिभाषासु वहीषु च,
मीमासांऽध्वरपंद्धते रभिनवा, तथास्तु सत्प्रीतये।

अर्थात् आपके पूज्य पिता का नाम श्री तोताराम जी एवं माता सुश्री धनवती देवी के पवित्र लालन-पालन एवं शास्त्रज्ञ आचार्य शिव दत्त शास्त्री से विभिन्न ग्रन्थों का अध्ययन करके आचार्य विश्वश्रवाः नाम से प्रसिद्ध हुये।

बरेली की पवित्र भूमि में निवास करते हुये देश व विदेशों में आपने वेदों का प्रचार-प्रसार किया था। बाल्यावस्था से ही आप तीव्र बुद्धि एवं अनुसन्धान में विशेष रुचि रखते थे, तर्क व प्रमाणों से प्रमाणित करना आपका स्वभाव था, अध्ययनशीलता, उसका चिन्तन-मनन उनके रोम-रोम में बसा था। आपके जीवन में प्रेरणा का मुख्य बिन्दु महामहोपाध्याय विद्या भास्कर पं० परमेश्वरानन्द शर्मा एवं शास्त्रज्ञ आचार्य शिवदत्त जी के समीप में रहकर विभिन्न शास्त्रों व वैदिक वाङ्गमय का अध्ययन किया और उन्होंने वैदिक ज्ञान से अवगत कराया। इसके बाद में इन्हीं की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द के वैदिक चिन्तन को गम्भीरता से अध्ययन किया था। उनके प्रत्येक व्याख्यानों में ऋषि दयानन्द की दृढ़ता के भाव झलकते थे। वे कहते थे कि ऋषि का प्रत्येक वाक्य प्रामाणिक व स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

शैक्षिक जीवन :-

आचार्य जी ने अपना शैक्षिक जीवन बनारस में प्रारम्भ किया, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से शास्त्री, आचार्य व वेद में आचार्य करके वेदाचार्य के रूप में भी विख्यात हुये थे।

विवाह :-

शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त आपका विवाह विदुषी श्री देवी शास्त्री जी से सन् १९३७ में हुआ था। विवाह के समय आपकी पत्नी मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की परन्तु आचार्य जी ने उनकी प्रतिभा का देख बाद में शास्त्री व आचार्या परीक्षा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से उत्तीर्ण की थी। आचार्य जी ने पारिवारिक दायित्व निर्वहन के साथ वेद वेदाङ्गों का प्रचार-प्रसार, लेखन का तल्लीनता से कार्य किया था।

आपके तीन पुत्र सर्वश्री वेदश्रवाः जो आज कल अमेरिका में निवास कर रहे हैं। (१) इन्दश्रवाः (२) यशश्रवाः (जो इन्जीनियर थे, असमय अल्प आयु में ही निधन हो गया था) तीन पुत्रियाँ (१) विश्वभारती (२) कीर्ति भारती (३) ज्योति भारती (जो आज कल विदेशों में निवास कर रही है)

सेवाकार्य :-

आचार्य जी ने वेदवेदाङ्गों का समुचित ज्ञान अर्जित करने के उपरान्त निम्न स्थानों पर सेवा कार्य भी किया था -

(१) भू० पू० प्रोफेसर :- श्री विश्वेश्वरा नन्द वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट, लाहौर
(२) श्रीमद् दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय
(३) डी० ए० वी० कॉलेज, रिसर्च विभाग, लाहौर
(४) रजिस्ट्रार :- गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन, मथुरा, उ० प्र०

आर्यसमाज की संस्थाओं में सक्रिय योगदान :-

आचार्य जी ने वेदों के प्रचार व लेखन के साथ आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं में भी सक्रिय भूमिका अदा की थी। देश की सर्वोच्च सार्वदेशिक आर्य धर्मार्थ सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, बलिदान भवन दिल्ली के आप कई वर्षों तक प्रधानमंत्री पद पर रहे थे। उसके साथ आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली, आर्य समाज भूड़ बरेली में भी आपका योगदान रहा है।

आचार्य जी के प्रकाशित ग्रन्थ :-

आचार्य जी ने अनेक वैदिक साहित्य पर ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं -

(१) निरुक्त को समझने में प्राचीन आचार्यों की भूल
(२) वेद और निरुक्त
(३) स्वामी दयानन्द जी की पाठ विधि का वास्तविक स्वरूप

(४) ऋग्वेद का अक्ष सूक्त (आर्य भाषा व अंग्रेजी भाषा में अनुवादित हुआ है)
(५) सत्यनारायण की प्राचीन कथा
(६) उपनिषदप्रकाश (सम्पादित – २५० उपनिषदों के नाम, शाखादि निर्देशपूर्वक विस्तृत भूमिका सहित)
(७) सन्ध्या पद्धति मीमांसा (पञ्च महायज्ञ विधि भाष्य) प्रथम प्रकाशक :- देवदत्त शर्मा, विश्वेश्वरानन्द वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट प्रेस, साधु आश्रम होशियारपुर, वि० सं० २०१५ को प्रकाशित।

द्वितीय प्रकाशन :- श्री घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य संस्थान, आर्य स्टोर, कटरा बाजार, हिण्डोन सिटी, राजस्थान, २५ दिसम्बर २००० ई०।

(८) स्तुति प्रार्थना उपासना (वेद मन्दिर प्रकाशन, ९९ बाजार मोती लाल, बरेली, उ० प्र०)

स्वरबिन्दुरवयुग्मेंऽब्देऽधिमासे वैक्रमें शुचौ।
शुक्रे पक्षे सितेऽष्टम्यां गन्थः पूर्तिमगादयम्।।

अप्रकाशित ग्रन्थ :-

आचार्य जी ने निम्न ग्रन्थों का भी निर्माण किया था, परन्तु अभी तक निम्न पुस्तकें प्रकाशित नहीं हो पायी थीं :-

(१) पातञ्जल व्याकरण महाभाष्य का आर्यभाषानुवाद।
(२) व्याकरणोदाहरण प्रकाश (इस ग्रन्थ में व्याकरण ग्रन्थों के उदाहरणों के अर्थ है)
(३) दयानन्द ग्रन्थोद्धरण प्रकाश (इसमें महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में उद्धत प्रमाणों की सूची ग्रन्थानुक्रम से है तथा उद्धरणों पर विवेचना की है।)
(४) वेदभाष्य प्रदीप (ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य की संस्कृत, आर्य भाषा और अंग्रेजी में टीका है)
(५) ताण्डवमहाब्राह्मण का आर्य भाषानुवाद

आचार्य जी के ग्रन्थों एवं विद्वत्ता के विषय में मूर्धन्य विद्वान विद्या भास्कर वेदान्त व्याकरणयुर्वेदाचार्य नवतीर्थ आचार्य हरिदत्त शर्मा जी ने अपनी सम्मति में लिखा है कि "आर्य समाज के साहित्यों में यज्ञ पद्धति मीमांसा एक उत्कृष्ट रचना है। इस ग्रन्थ में आचार्य विश्वश्रवाः जी की विश्वतोगामिनी प्रतिभा का परिचय मिलता है, यज्ञ सम्बन्धी क्रियाओं का गूढ़ रहस्य जो सुदीर्घकाल से लुप्त हो गया था, उसका अन्वेषण करके आचार्य जी ने वैदिक कर्मकाण्ड का पुनरुद्धार किया है। यज्ञ करने वालों के हृदय में कुछ ऐसे प्रश्न उठते थे, जिनका अभी तक किसी आर्य विद्वान ने समाधान नहीं किया था, उनका समाधान यज्ञ पद्धति मीमांसा ग्रन्थ में बड़ी उत्तमता से किया गया है।

नित्य यज्ञ के सब मंत्रों का पाण्डित्यपूर्ण सुसंगत और सरल अर्थ इस ग्रन्थ में है, जो साधारण योग्यता वाले व्यक्तियों को भी आसानी से याद हो सकता है। मन्त्रों का अर्थ जानने पर

यज्ञ के करने में जो आनन्द आता है, वह वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता। विश्वानि देव० आदि प्रार्थना के मंत्रों की व्याख्या और संगति जो आचार्य जी ने लगाई है, उसके पढ़ते-पढ़ते तो भक्त आनन्द के सागर में मग्न अपने आप को समझेगा। प्रत्येक यज्ञ करने वाले व्यक्ति को यह ग्रन्थ अपने पास रखना चाहिये। इस ग्रन्थ में विद्वत्तापूर्ण विवेचना इतनी अधिक है कि बड़े से बड़े विद्वान को भी इसे एक बार पढ़ना ही पड़ेगा।

दो मन्त्रों में एक समिधाहुति, जल सिंचन दक्षिण दिशा में क्यों नहीं ? भूरग्नये प्राणाय स्वाहा आदि मन्त्रों की रचना इत्यादि पाण्डित्यपूर्ण विषय इसमें देखने ही योग्य हैं, मन्त्रों के पौर्वापर्य की संगति भी आचार्य जी की उपजा ही है।"

आचार्य जी आर्य समाज के गौरवमयी इतिहास में विद्वत्ता की महान प्रतिमूर्ति थे, उन्होंने ऋषि के ग्रन्थों की जो प्रामाणिक व्याख्या की है उसका लोहा आज भी माना जाता है, वह सत्य व प्रमाण में निष्ठावान थे, इसीलिये कभी-कभी प्रमाणरहित असत्य विवेचन पर उन्हें क्रोध भी आ जाता था, उन्होंने कभी भी ऋषि ग्रन्थों एवं वैदिक सिद्धान्तों की आलोचना करने वाले सदा अपनी विद्वता से परास्त किया है। इसीलिये वे महेश योगी के सानिध्य में तो आयें परन्तु कतिपय अप्रमाणिक वक्तव्यों को सहन नहीं कर पाये और अपार धन-दौलत को अत्यन्त सरलता से तिरस्कृत कर दिया था।

आचार्य जी पुस्तकों के अत्यन्त स्नेही या कहा जाये कीड़े थे तो अतिश्योक्ति न होगी। उनकी पुस्तकें बिना उनकी आज्ञा के कोई छू भी नहीं सकता था, वे अपनी पुस्तकों को अपने प्राणों से ज्यादा प्यार करते थे, इसलिये किसी को भी पुस्तक नहीं देते थे। यदि पुस्तकों की आवश्यकता किसी को होती थी तो उन्हीं के ही पुस्तकालय में ही बैठकर पढ़ सकता था, आचार्य जी का अध्ययन अत्यन्त गाम्भीर्य लिये हुये था, उन्होंने जो पढ़ लिया वह सदा उनके मस्तिष्क में विद्यमान रहता था, इसलिये अन्तिम क्षणों में आँखों की ज्योति न्यून होने पर भी वे स्पर्श मात्र से अपने पुस्तकालय की अलमारी से पुस्तक निकालकर और उस पुस्तक में पढ़ने योग्य पृष्ठ को निकाल देते थे।

आचार्य जी शास्त्रार्थ में भी निपुण थे, किसी भी प्रश्न का उत्तर मय प्रमाणों के क्षण भर में ही निकालकर रख देते थे। आर्य समाज स्थापना शताब्दी वाराणसी में उन्होंने अनेकों पौराणिक पण्डितों को अपने प्रमाणों से निरुत्तर किया था। वे अप्रमाणिक तथ्यों को कभी भी स्वीकार नहीं करते थे, और इसीलिये ही उन्हें क्रोध भी अतिशीघ्र आता है। आम भाषा में आचार्य जी के स्वभावानुसार उन्हें दुर्वासा ऋषि की संज्ञा दी जाती थी, इसीलिये उनके समक्ष ऋषि ग्रन्थों एवं वैदिक ग्रन्थों के विपरीत कोई बोल नहीं सकता था। वे कहते थे कि महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित प्रत्येक

वाक्य प्रामाणिक एवं शत-प्रतिशत सत्य हैं, उस पर विवाद करना अज्ञानता का सूचक है।

आचार्य जी का जीवन सादा व सात्विक था। वे सर्वदा भौतिकता की आंधी से दूर रहते थे, सुख साधनों में कभी भी आसक्त नहीं हुये। भारतीयता के परिवेश में अपने को सदा रखा तथा समाज को भी उसी परिपेक्ष्य में रहने का आवाहन किया।

आचार्य जी महोपदेशक व व्याख्यान वाचस्पति के नाम से भी प्रसिद्ध थे, उनके व्याख्यानों में प्रमाणों का पुट सर्वाधिक रहता था। किसी भी विषय पर किसी भी समय उनके व्याख्यान कराये जा सकते। उनको व्याख्यान करने के लिए विचार करने की आवश्यकता नहीं होती थी।

आचार्य जी ने विदेशों में भी वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया है, श्री महेश योगी जी के साथ उन्हें अनेकों बार विदेश जाने का अवसर मिला था, अमेरिका आदि देशों में उन्होंने वेदों पर अनेकों व्याख्यान दिये थे, अनेक वैदेशिक विद्वानों ने उनकी विद्वता की प्रशंसा भी की है।

आचार्य जी एक ऐसे वैदिक वाङ्मय के सूर्य थे, जिनको ज्ञान का पूर्ण ज्ञाता कहा जाता था, प्रमाणों का मस्तिष्क कहते थे, अनुसन्धान का महारथी कहा जाता था और क्रोध के दुर्वासा नाम से भी जाना जाता था।

वैदिक वाङ्गमय के मूर्धन्य विद्वान आचार्य जी ने अन्तिम क्षणों तक अध्ययन, अध्यापन, शोधकार्य का मार्गदर्शन करते रहे, पुस्तकों व ग्रन्थों का अपार भण्डार उनके पास था, कोई भी ऐसा ग्रन्थ न था जो उनके पुस्तकालय उपलब्ध नहीं था। समय ने धीरे-धीरे अस्वाभाविक रोगों से जकड़ लिया, शरीर दुर्बल होने लगा, इसी बीच परिपक्वता पर पहुँचने वाली आयु को पार करते हुये ईश्वर की व्यवस्थाओं के अनुसार सन् फरवरी १९९३ में यशस्वी होकर सदा के लिये अपने प्रकाण्ड ज्ञान की स्मृतियों को छोड़ चले गये। न जाने कितनों को ज्ञान के सागर में पिरो गये। अपार ज्ञान का भण्डार दे गये।

> "ईश्वर-सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वर्न्तयामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।"
>
> – *महर्षि दयानन्द*



।। ओ३म् ।।

प्रकाण्ड विद्वान समर्पित आर्य आर्यसेवक ब्रह्मचारी (डॉ०) संतोष कण्व

अगर मन में ठान लिया जाये तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। मनुष्य अपनी मेहनत व दृढ़ इच्छा शक्ति से कोई भी असंभव कार्य सम्भव करके दिखा सकता है। ऐसे ही एक व्यक्ति थे ब्रह्मचारी (डॉ०) संतोष कण्व। जिन्होंने अपनी दृढ़ इच्छा से न केवल आर्य समाज की सेवा की थी बल्कि उनके सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

बरेली नगर के घनी बस्ती वाले क्षेत्र चाहबाई की एक गली के छोटे से मकान में श्री जगदीश बहादुर रायजादा के परिवार में साध्वी, सरल एवं धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत माता श्रीमती विद्या देवी के कोख से जन्में बालक संतोष कण्व बाल्यावस्था से ही ऋषि दयानन्द से प्रभावित थे। वैदिक सिद्धान्तों से ओत-प्रोत रहे।

१० जुलाई १९५२ में जन्मे ब्रह्मचारी संतोष कण्व ने अपने माता-पिता के सानिध्य रहकर बाल्यावस्था में अध्ययन शुरू किया। बचपन से ही तीव्र बुद्धि के थे। जिस कक्षा में पढ़ते थे उसके आगे की कक्षा को पढ़ाते भी थे। इतना ही नहीं ऐसे बच्चों को जिनके पास पुस्तकें नहीं होती थी या धन का अभाव रहता था उनके लिए हर सम्भव सहायता को तत्पर रहते थे। कम बोलना, तर्क युक्त बात कहना तथा गम्भीर स्वभाव प्रारम्भ से ही रहा, यदि घर या बाहर का कोई व्यक्ति कुछ कह भी देता था, तो मुस्कराकर कहते थे कि मेरा तो कुछ भी नहीं है जो चाहें कह लो। बाल्यावस्था से ही समर्पण की भावना विद्यमान थी।

बचपन में जब उनसे कोई पूछता था कि संतोष तुम क्या बनोगे, तो कहते थे कि मैं समाज का हूँ, देश का हूँ तो और क्या बनूँगा उसी के लिये जीऊँगा उसी के लिए मरूँगा। भावना से समाज, कर्म में देश व समाज सेवा, सिद्धान्तों में वेद व प्रेरणा श्रोत थे ऋषि दयानन्द सरस्वती। शायद इसीलिए बचपन से ही उन्होंने अपने को समाज के लिये समर्पित कर रखा था और उनका उद्देश्य था कि वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन करके समाज की सेवा में तल्लीनता से समर्पित हो जायें।

माता-पिता के अग्रज पुत्र संतोष ने जब अपनी युवावस्था में प्रवेश किया तो उनके मन में ज्ञान की विभिन्न विधाओं के अध्ययन की लालसा प्रारम्भ हो गई। विज्ञान के छात्र होते हुये भी

उन्होंने विभिन्न सम्प्रदायों के साहित्य, वेदशास्त्रों, विश्व का इतिहास, विभिन्न भाषाओं का गहन अध्ययन किया। बरेली कॉलेज से बी०एस-सी० तथा एम०एस-सी० गणित में करके उपरोक्त गणित विषय में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में रहकर पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित हुये थे। पुनः इसी विश्वविद्यालय में कई वर्ष अध्यापन का कार्य भी किया था। लेकिन ब्रह्मचारी संतोष कण्व को समाज की विभिन्न विकृतियों, अन्धविश्वास व समाज सुधार की ललक थी। उन्होंने असहाय-असमर्थ दयालु समाज की सेवा का संकल्प लिया और विश्वविद्यालय के सीमित कार्यक्षेत्र को छोड़कर ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि के उत्थान के लिए कूद पड़े।

इसी बीच माँ का ममत्व व पिता का लालन एवं दायित्व की भावना ने उनको पुनः उत्साहित किया, तो पंत नगर विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य में पुनः लग गये, लेकिन मन अत्यन्त विचलित रहा। इसी बीच विभिन्न धर्मशास्त्रों का पुनः गम्भीरता से अध्ययन, महापुरुषों की जीवन गाथायें। महर्षि दयानन्द व वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। सभी धर्मावलम्बियों के वास्तविक ज्ञान के लिए तल्लीनता से लग गये।

महर्षि अरविन्द घोष, रामकृष्ण परमहंस, आचार्य रजनीश आदि के साहित्यों का भी गम्भीरता से अध्ययन किया था। उनकी दृष्टि में ऋषि दयानन्द का वैदिक साहित्य, वैदिक चिन्तन ही राष्ट्र व समाज को श्रेष्ठ मानवीय उत्थान का संदेश दे सकता है।

डॉ० संतोष कण्व वैदिक सिद्धान्तों को जन-जन में प्रसारित करना चाहते थे। माता-पिता ने युवा संतोष के विवाह की उत्सुकता दिखाई तो उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि यह नश्वर शरीर आर्य समाज के लिये समर्पित है तथा ऋषि दयानन्द के जीवन का ही अनुसरण करेगा। इसलिये उन्होंने बाल ब्रह्मचारी होने का व्रत लिया।

पंत नगर विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र छोड़कर सर्वप्रथम बरेली में मूर्धन्य विद्वान आचार्य विश्वश्रवाः व्यास व प्रकाण्ड विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारी लाल शास्त्री जी माता वेदभारती सावित्री देवी जी, वेदाचार्य जी के सम्पर्क में आये। उन्हीं की प्रेरणा से आर्यसमाज के उत्थान व प्रचार-प्रसार के लिये समर्पित हो गये। इसके बाद स्व० श्री भद्र गुप्त जी (डाबर वाले), श्री स्व० जगदीश शरण आर्य (तोपखाने वाले) व पं० रामप्रसाद मिश्र आदि के अत्यन्त आग्रह पर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिये आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली को केन्द्र बनाया।

अब क्या था घर छोड़ व भौतिकतावादी सुखों से दूर सम्पूर्ण देश के कोने-कोने में प्रचार-प्रसार के लिये अपनी गतिविधियाँ प्रारम्भ कर दी। आर्य समाज बिहारीपुर की प्रत्येक गतिविधियों का निर्देशन, चाहे वार्षिकोत्सव हो या वेद-प्रचार सप्ताह या चाहे रामगंगा मेला हो या होलीमिलाप

सभी में आर्य समाज के प्रचार के लिये तल्लीनता से लग जाते थे। शुद्धि के कार्य में भी आपने अग्रणी भूमिका निभाई थी। वैदिक सिद्धान्तों से भ्रमित लोगों को अपने घर में पुनः लाने की उनमें अद्भुत कला थी। उनको प्रचार-प्रसार की ललक थी, वह अक्सर कहते थे कि धन तो ईश्वर देता, धर्म के काम में धन की कमी नहीं होती है। सिद्धान्तों का प्रचार होना चाहिये; जिससे समाज में धार्मिक चेतना बनी रहे।

डॉ० संतोष कण्व जी राष्ट्रीय स्तर के महान व्यक्तित्व थे, जिन्होंने जीवन भर भौतिक सुखों से दूर, ब्रह्मचर्य का पालन कर वेदप्रचार के लिये समर्पित कार्यकर्ता थे। उन्होंने समाज व राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया, लेखन शैली से समाज को नवीन चेतना प्रदान की थी। जगह-जगह आपके दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक व्याख्यानों से परिवारों को बदलता देखा गया है।

डॉ० संतोष कण्व की विशेषता थी कि ग्रामीण अँचल में सिद्धान्तों का प्रचार सर्वाधिक किया था, उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक आर्यसमाजों में स्थापना भी की थी। लोग उनके आदर्शों का अभी भी पालन कर रहे हैं, उनकी स्मृतियाँ, उन आदर्शवान अनेक परिवारों में झलक रही है।

लेखन व प्रकाशन :-

डॉ० संतोष कण्व जी ने लेखन व प्रकाशन का भी अपूर्व कार्य किया है। वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित अनेकों प्रेरणास्पद पुस्तकों का प्रकाशन किया और उन पुस्तकों पर कहीं भी अपने नाम का उल्लेख नहीं किया करते थे और प्रकाशित करके निःशुल्क बाँट देते थे। आपने वैदिक सामान्य ज्ञान, उर्दू क्यों लाओ, लालपरी आदि लघु पुस्तकें लिखी थीं। इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिकता, कारण और निदान, मन्दिरों का औचित्य, वैदिक वाङ्गमय पर पाश्चात्य का भ्रम और हम, उत्तर प्रदेश को द्विभाषी सूत्र मत बनाओ, उर्दू की आड़ में पृथकतावाद को बढ़ावा, उर्दू को अपने घर में रुसवा मत करो आदि लेख प्रकाशित हुये थे जो देशभर में चर्चा का विषय बने थे। आपने सृष्टि विज्ञान नामक पुस्तक का सम्पादन भी किया था।

उनके अनेकों विभिन्न विषयों पर लेख एवं कवितायें आर्य जगत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं आर्यजगत, सार्वदेशिक, राजधर्म, आर्यमित्र, गान्डीवम्, परोपकारी, आर्य सन्देश अमर उजाला, दैनिक जागरण, विश्व मानव आदि में प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो चुके हैं।

विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय भूमिका :-

डॉ० संतोष कण्व जी बरेली के अतिरिक्त देश की विभिन्न संस्थाओं से भी सक्रियता से

जुड़े रहे। आर्य समाज बिहारीपुर के सदस्य रहते हुये महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करते थे, उन्हीं की योजनाओं के अनुसार बिहारीपुर आर्यसमाज की गतिविधियाँ के द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार होता था।

आर्य समाज बिहारीपुर बरेली से सम्बन्धित आर्य समाज अनाथालय की सेवा में भी तल्लीनता से तत्पर रहते थे, वहाँ के अनाथ बच्चों में इतना घुले-मिले थे कि जैसे वे ही उन बच्चों के माता-पिता हों, उनकी प्रत्येक आवश्यकताओं के लिये अपनी दाक्क्षणिक आप से पूरा करने के लिये तैयार रहते थे। अन्तिम समय तक अनाथालय के विकास की चिन्ता उनके हृदय में थी। वे आर्य उप प्रतिनिधि सभा के भी सक्रिय कार्यकर्ता थे, उनके अनुसार जिला सभा प्रचार-प्रसार का कार्य करती थीं, ग्रामीण अन्चल में जिला सभा के द्वारा उन्होंने अत्यधिक प्रचार किया था तथा बरेली जिले में अनेक ग्रामों में आर्य समाज की स्थापना भी की थी। जो आज भी सक्रिय व गतिशील है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० व सार्वदेशिक सभा के कार्यकलापों में भी उनकी सक्रियता थी। अन्तर्राष्ट्रीय विख्यात आर्य सन्यासी स्वामी अग्निवेश एवं पूर्व सांसद स्व० स्वामी इन्दवेश जी की गतिविधियों में भी उनकी सदा सहभागिता रहती थी। स्वामी अग्निवेश जी की मासिक पत्रिका राजधर्म का सह-सम्पादन का कार्य आपके द्वारा ही होता था बल्कि पूरी पत्रिका का प्रकाशन आपके निर्देशन में ही होता था।

डॉ० संतोष कण्व एक राष्ट्रीय स्तर के कर्मठ विद्वान थे, स्पष्ट वक्ता, प्रखर उपदेशक तथा भयरहित चिन्तन को समाज के समक्ष रखते थे। वैदिक समाजवाद के समर्थक थे, गुण-कर्म स्वभाव की सामाजिक व्यवस्था के पक्षधर थे। वेदों की विचारधारा के सम्पोषक एवं वैदिक एकरूपता के समाज की कल्पना उनके मस्तिष्क में विद्यमान थी, इसी प्रयास में उन्होंने अपना सर्वस्व जीवन समर्पित कर रखा था।

अन्तिम क्षणों में अस्वस्थ रहते हुये, वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार की चिन्ता प्रतिपल सताती रहती थी। लोगों से मिलना, उन्हें आर्य समाज की व्यवस्थाओं के विषय में बताना, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उन्हें शायद आभास हो रहा है कि परमपिता परमेश्वर से साक्षात्कार होने वाला है। मृत्यु से पूर्व राजधर्म में उन्होंने एक लेख में लिखा भी था कि मेरी मृत्यु इच्छानुसार ही होगी। जब कभी भी उनसे कोई पूछता था कि संतोष जी आपका स्वास्थ्य कैसा है तो प्रसन्नतापूर्वक कहते थे कि अब तो पहले से काफी सुधार है, उन्होंने अपने कष्टों का किसी को भी अनुभव नहीं होने दिया, प्रतिपल उनके स्वास्थ्य में गिरावट चिन्ता का विषय बन रही थी। आर्य समाज के पदाधिकारी उनके स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रयत्नशील थे, परन्तु

परमेश्वर के विधान ने उन्हें अल्प अवस्था में ही आर्य समाज के एक योग्य, कर्मठ, निर्भीक, वैदिक विचारधारा के पक्षधर ब्रह्मचारी को ३० मई २००२ की ब्रह्ममुहूर्त में सदा के लिये परमेश्वर की व्यवस्थाओं में समर्पित कर दिया, उनका प्रत्येक वाक्य, लेखनी का एक-एक शब्द मानव जीवन को श्रेष्ठ मार्ग पर चलने का सन्देश दे रहा है। उनकी कविताओं के भाव संसार की वास्तविकता का आंकलन कर रही है। उनकी लेखनी का अन्तिम पड़ाव उन्हीं की निम्न कविताओं में दृष्टिगोचर हो रहा है –

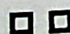
वक्त कटता गया उम्र धरती गयी,
जिन्दगी यूँ ही सारी गुजरती गयी।
कब सुबह हो गयी दिन का सूरज चढ़ा,
शाम होकर निशा भी विदा हो गयी।
दिन महीने बरस बीतते ही गये,
नींद ही नींद में हवा हो गयी।।१।।

जिस पर मरता गया रात-दिन तू यहाँ,
सारी दुनियाँ यहीं की यहीं रह गयी।
चलते-चलते थमा तू नहीं था मगर,
साँस चल-चल के एक दिन स्वयं थम गयी।।२।।

अब रहा हाथ क्या देह धरती पे है,
चार काँधों पर चढ़के चलेगा अभी।
चुन चुकी है चिता जिस पर लेटेगा तू,
और धू धू के काठी जलेगी अभी।।३।।

सब खिलौने हैं तू खेल ले शौक से,
देह माटी की माटी में मिल जायेगी।
कब दिया साथ किसने बता दे यहाँ,
पोल रिश्तो की एक दिन खुल जायेगी।।४।।

वक्त रहते संभल जा तभी ठीक हैं,
बाद में हाथ कुछ भी बचेगा नहीं।
सब गंवा दी जो पूँजी यों ही खेल में,
चोला मानव का जल्दी मिलेगा नहीं।।५।।



।।ओ३म्।।

बरेली में ऋषि दयानन्द का इतिहास

(१) ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से ही सन् १८८३ को आर्य समाज बिहारीपुर तथा आर्य समाज अनाथालय की स्थापना हुई थी।

(२) बरेली में ऋषि दयानन्द से प्रभावित होकर बरेली के प्रथम कोतवाल श्री नानक चन्द जी के पुत्र मुंशी राम जो बाद में "स्वामी श्रद्धानन्द" के नाम से विख्यात हुये।

(३) बरेली में ऋषि दयानन्द का आगमन एवं प्रवास नगर में तीन बार हुआ था। प्रथम बार ६ नवम्बर १८७६ को, द्वितीय बार २६ नवम्बर १८७६ को तथा अन्तिम बार १४ अगस्त १८७९ को हुआ था। अन्तिम प्रवास में उनके अनेकों उपदेश पुराने टाउन हॉल पर हुये थे तथा २५, २६, २७ अगस्त १८७९ को पुर्नजन्म, ईश्वरावतार तथा क्या ईश्वर पापों को क्षमा कर देता है ? विषयों पर पादरी टी० जे० स्कॉट से लिखित शास्त्रार्थ भी हुआ था और सत्य स्थिति को लोगों ने स्वीकार किया था। पादरी स्कॉट ने बाद में महर्षि दयानन्द का गिरजा घर में उपदेश भी कराया था। आज उसी स्थान को महर्षि दयानन्द चौक के नाम से जाना जाता है, वहाँ पर एक विशाल शिलालेख पर महर्षि की स्मृतियाँ विद्यमान हैं।

(४) बरेली में ऋषि दयानन्द की सिंह गर्जना जो इतिहास का अंग बन चुकी है, ने कहा था "लोग कहते हैं सत्य को प्रकट मत करो कलैक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा, अरे चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हों हम तो सत्य ही कहेंगे।"

(५) चौधरी नौबत राय द्वारा बनवाये गये चौधरी तालाब स्थित पीपल का वृक्ष ऋषि दयानन्द की समाधि स्थान था, कई बार स्वामी जी को तालाब में स्नान तथा समाधि लगाते देखा गया था।

(६) महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों से प्रभावित होकर ही बरेली नगर का यह गौरव है कि यहाँ के ही शास्त्रीय महारथी पं० बिहारी लाल शास्त्री, वेदभारती डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या, आचार्य विश्वश्रवाः व्यास तथा डॉ० सन्तोष कण्व ने देश भर में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया था।

□ □



।। ओ३म् ।।

ईशोपासना सम्बन्धी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनमोल वाक्य

(१) सदा स्त्री पुरुष रात्रि १०.०० बजे शयन और रात्रि के पिछले प्रहर ४ बजे उठ के प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म और अर्थ का विचार किया करें........तत्पश्चात् शौच, दन्तधावन, मुख प्रक्षालन करके स्नान करें। पश्चात् एक कोश या डेढ़ कोश एकान्त जंगल में जा के योगाभ्यास की रीति से परमेश्वर की उपासना कर, सूर्योदय पर्यन्त अथवा घड़ी आध घड़ी दिन चढ़े घर में आ के, सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म से यथा विधि उचित समय में किया करें। *(संस्कार विधि, गृहाश्रम प्रकरणम्)*

(२) जब उपासना करना चाहें तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर, आसन लगा, प्राणायाम कर, बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि प्रदेश में या हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर, आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न होकर संयमी होवें। जब इन साधनों को करता है तब उसकी आत्मा और अन्तः करण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाती है। नित्य प्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुँच जाता है। ......

इसका फल – जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। *(सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास)*

(३) ....जीव को परमेश्वर की उपासना नित्य करनी उचित है। अर्थात् उपासना समय में सब मनुष्य अपने मन को उसी में स्थिर करें। ......

योग को करने वाले मनुष्य तत्व अर्थात् ब्रह्मज्ञान के लिए जब अपने मन को पहले परमेश्वर में युक्त करते हैं, तब परमेश्वर उनकी बुद्धि को अपनी कृपा से अपने में युक्त कर लेता है। फिर वे परमेश्वर के प्रकाश को निश्चय करके यथावत् धारण करते हैं। *(ऋग्वेदादि०, उपासना विषय)*

(४) जिस पुरुष के समाधियोग से अविद्यादि मल नष्ट हो गये हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिसने लगाया है, उसको जो परमात्मा के योग का सुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जा सकता, क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है। उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो-जो काम करना होता है। वह-वह सब करना चाहिए। *(सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास)*

(५) जिस समय इन सब साधनों से परमेश्वर की उपासना करके उसमें प्रवेश किया जायें, उस समय इस रीति से करें कि – कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में और उदर के ऊपर जो हृदय देश है, जिसको ब्रह्मपुर

अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है, उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाशरूप एक स्थान है, और उसके बीच में जो सर्वशक्तिमान परमात्मा बाहर भीतर एकरस होकर भर रहा है, वह आनन्द स्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं है। *(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, उपासना विषयः)*

(६) जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रति क्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता जाता है। जब तक मुक्ति न हो तब तक उसके आत्मा का ज्ञान बराबर बढ़ता जाता है।

दह्यन्ते ध्यायमानानां धातूनां च यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।।

(मनु० ६/७१) यह मनुस्मृति का श्लोक है -

जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होते हैं, वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं। *(सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास)*

(७) जैसे भोजन के पीछे किसी प्रकार से वमन हो जाता है, वैसे ही भीतर की वायु को बाहर निकाल के सुखपूर्वक जितना बन सके उतना बाहर ही रोक दें। पुनः धीरे-धीरे भीतर ले के पुनरपि ऐसे ही करें। इसी प्रकार बारम्बार अभ्यास करने से प्राण उपासक के वश में हो जाता है। और प्राण के स्थिर होने से मन, मन के स्थिर होने से आत्मा भी स्थिर हो जाता है। इन तीनों के स्थिर होने के समय अपने आत्मा के बीच में जो आनन्दस्वरूप अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके स्वरूप में मग्न हो जाना चाहिए। जैसे मनुष्य जल में गोता मारकर ऊपर आता है, फिर गोता लगा जाता है, इसी प्रकार अपने आत्मा को परमेश्वर के बीच में बारम्बार मग्न करना चाहिये। *(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, उपासना विषय)*

(८) इस प्रकार प्राणायाम पूर्वक उपासना करने से आत्मा के ज्ञान का आवरण अर्थात् ढाँपने वाला जो अज्ञान है वह नित्यप्रति नष्ट हो जाता है, और ज्ञान का प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता जाता है।

(९) यह उपासना योग दुष्ट मनुष्य को सिद्ध नहीं होता, क्योंकि जब तक मनुष्य दुष्ट कार्यों से अलग होकर, अपने मन को शान्त और आत्मा को पुरुषार्थी नहीं करता तथा भीतर के व्यवहारों को शुद्ध नहीं करता तब तक कितना ही पढ़े वा सुने उसको परमेश्वर की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती।

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, उपासना विषयः)

(१०.) ...... जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रखे हैं उसका गुण भूल जाना ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है। *(सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास)*

वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है।



।। ओ३म् ।।

श्री सन्त लाल जी

(जन्म - २९ अगस्त १९०२ मृत्यु २९ अगस्त १९७१ ई०)

श्रीमन् सद्गुण भूपित परहित चिन्तनरत थे,
सदा प्रसन्न, सुकोमल पर दुःख दलन थे
न्याय, दया सौजन्य सत्य की मूर्ति बने थे,
तम हरते मानस का जन-मन अधिनायक थे
लाये पीड़ित शोषित जन को करुणामय जल,
लक्ष्मी का उपयोग किया बन निर्बल के बल
जीवन निज धर्मार्थ बिताया जिसने प्रतिपल,
वन्दनीय उस सन्त हृदय का आत्मिक बल
जन्म लिया धरती पर आये धर्मव्रती बन,
सन् उन्नीस सौ दो अगस्त उन्तीस पुण्य दिन
आये जीवन ज्योति जगाने जगती तल पर,
जड़ चेतन में मोद मनाया शुभागमन पर
वही अटल उन्तीस अगस्त निर्माण घड़ी थी,
विधि ने अन्तिम यात्रा की सज्जा कर दी थी
आर्य समाज बिहारीपुर का सत्सङ्ग स्थल,
सन्त समाज मध्य शोभित श्रीसन्त सन्त सम
शान्त भाव से वेद मंत्र व्याख्यान श्रवण कर,
शान्ति पाठ करते-करते हो गये ब्रह्मलय
शुभ कर्मों के धनी सन्त ने सद्गति पाई,
छूटा नश्वर देह अमृत की गोद सजाई
नश्वर जग के पार मुक्ति का मार्ग बनाया,
जीवन में ही सुखद स्वर्ण सोपान सजाया
उस विभूति को करते अर्पित नत वन्दन,
उनके आचरणों का ही करे अनुसरण।

विरचित : वेदभारती डॉ० सावित्री देवी शर्मा, वेदाचार्या

संस्मरण एवं स्मृतियाँ शेष





आर्यसमाज विहारीपुर में डॉ० सावित्री देवी शर्मा के अभिनन्दन के अवसर पर वेदोपदेश करतीं वेदाचार्या डॉ० शर्मा तथा पूर्व प्रधान भद्रगुप्त जी स्व० अशर्फी लाल आर्य, स्व० रामप्रसाद मिश्र एवं युवा ओमप्रकाश आर्य व तेज गुप्त जी।



र्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान आर्य हिला सम्मान से अभिनन्दित होती डॉ० सावित्री देवी शर्मा साथ में सद रासा सिंह जी एवं प्रधान कैप्टिन देवरत्न जी।





वेदाचार्या की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के अधिकारियों द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त करतीं वेदाचार्या डॉ० सावित्री देवी शर्मा।







र्यसमाज हिन्डोन सिटी के द्वारा डॉ० सावित्री देवी शर्मा चार्या जी को आर्य साहित्य अभिनन्दन के अवसर पर भिनन्दन पत्र भेंट करते ट्रस्ट के मंत्री श्री प्रभाकर देव आर्य।

आर्यसमाज विहारीपुर में वार्षिकोत्सव के अवसर पर ब्रह्मचारी डॉ० संतोष कण्व द्वारा ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट करते।

संस्मरण एवं स्मृतियाँ शेष





आर्यसमाज अनाथालय के विशिष्ट कार्यक्रम में पं० बिहारी लाल शास्त्री एवं वेदाचार्या डॉ० सावित्री शर्मा वेदोपदेश करती हुयीं।



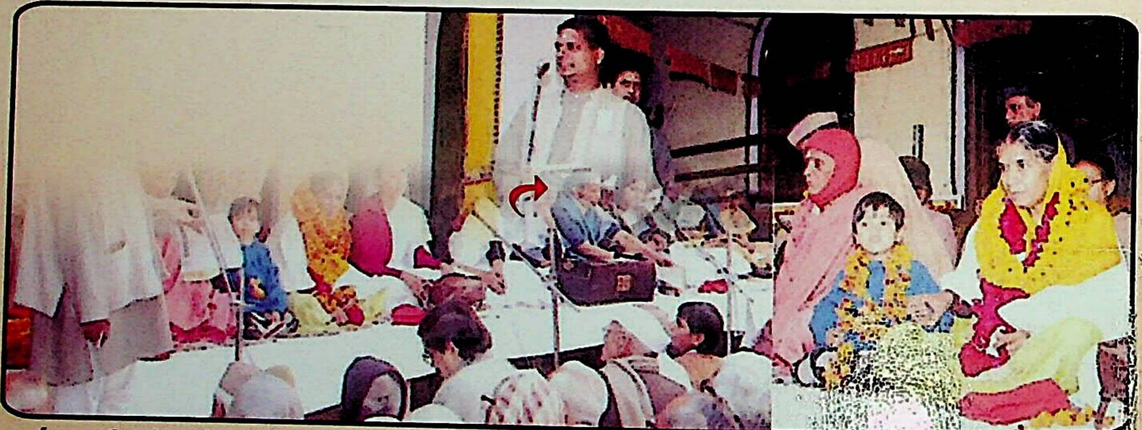


राष्ट्रीय समस्याओं एवं आर्यसमाज पर वार्तालाप करतीं डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या साथ में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वामी अग्निवेश एवं सांसद स्व० स्वामी इन्द्रवेश जी।





आर्यसमाज हिण्डोन सिटी के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान आर्य साहित्य सम्मान व पुरस्कार से अभिनन्दन के अवसर पर गम्भीर मुद्रा में डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या।



आर्यसमाज बिहारीपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सारगर्भित व्याख्यान देते ब्रह्मचारी डॉ० संतो [illegible] अभिनन्दित विदुषी डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या